एकता के प्रयास

पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) देश में अखिल भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के गठन को अपना केन्द्रीय कार्यभार मानती है। इस दिशा में अपना क्षमताभर योगदान करते हुये पुनर्गठन कमेटी ने सितम्बर 2001 में, 1989 तक एक रहे भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) से बाद में पैदा हुये विभिन्न ग्रुपों-- केन्द्रीय कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) ; सामान्य परिषद, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) और क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत-- को पुनः एकता स्थापित करने के लिए एक प्रस्ताव दिया। इस एकता प्रस्ताव पर तीनों संगठनों की प्रतिक्रिया भिन्न-भिन्न रही। जहां पहले के दोनों संगठनों ने प्रारंभिक नकारात्मक रुख के बाद वार्ता के लिए अपनी सहमति जताई वहीं तीसरे ने नकारात्मक मौखिक टिप्पणियॉ करके एकता के प्रयास से किनाराकशी करने की कोशिश की। पहले के दोनों संगठनों से क्रमशः जुलाई व अगस्त 2002 में पहले चक्र की वार्ता हुयी। दोनों ही संगठनों ने वार्ता को सकारात्मक बताया और वार्ता आगे बढ़ाने के लिए लिखित सहमति दी। लेकिन उसके बाद दोनों ने ही पूरे मामले में टाल-मटोल का रुख अपना लिया और पुनर्गठन कमेटी द्वारा वार्ता के लिए बार-बार आग्रह किये जाने के बावजूद वे अगले चक्र की वार्ता के लिए आगे नहीं आये। अंततः पुनर्गठन कमेटी ने इस पूरी प्रक्रिया के लिए नवंबर 2003 अपनी ओर से अंतिम सीमा घोषित कर दी और कहा कि यदि वे इस तारीख तक कोई प्रतिक्रिया नहीं देते तो पुनर्गठन कमेटी एकता वार्ता को खत्म हुआ मानकर अपने हिसाब से कार्यवाही करने के लिए स्वतंत्र होगी। इस पर भी सामान्य परिषद ने कोई जवाब देने की जरुरत नहीं समझी जबकि केन्द्रीय कमेटी ने केवल इतना लिखा कि वह पुनर्गठन कमेटी के पत्र का जवाब देगी। दिसम्बर बीत जाने तक भी यह जवाब नहीं आया है (छपते-छपते... 28-12-2003 को इस संगठन की ओर से एक पत्र प्राप्त हुआ, जिसमें उन्होंने अपनी ओर से औपचारिक रूप में बातचीत जारी रखने को औचित्यहीन बताया।)।

क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत काफी टाल-मटोल और ना-नुकुर के बाद अंततः केवल यह बताने के लिए एक वार्ता में आयी कि वह क्यों एकता वार्ता नहीं करना चाहती। एकता के मामले में उसने अपनी बात वहीं समाप्त कर दी।

कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठनों के बीच एकता के बारे में इन तीनों ही संगठनों का रुख अत्यन्त दुर्भाग्यपूर्ण है। इनका यह रुख केवल वर्तमान बिखराव को बनाए रखने में ही सहायक होगा। यह केवल भारतीय क्रान्ति के दुश्मनों के ही फायदे की बात है।

यहां हम इन तीनों संगठनों से इस एकता प्रयास के सिलसिले में हुए तमाम खतो-किताबत को प्रकाशित कर रहे हैं जिससे कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी शिविर इससे परिचित हो सके।

सितम्बर, 2001 का प्रस्ताव

प्रिय साथियों,

भारत का क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन आज बिखराव का शिकार है। विगत शताब्दी के मध्य के बाद से ही अन्तर्राष्ट्रीय और राष्ट्रीय स्तर पर संशोधनवाद के हावी हो जाने के कारण वैश्विक और राष्ट्रीय, दोनों स्तरों पर क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन को धक्का लगा था। लेकिन उसके बाद अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर 1956 - 63 के दौर की 'महान-बहस' और उसके बाद चीन की 'महान सर्वहारा सांस्कृतिक क्रान्ति' के प्रयोग ने और राष्ट्रीय स्तर पर नक्सलबाड़ी के किसान- उभार ने पुनः सकारात्मक दिशा में गति पैदा की और तदुपरान्त भारत में संशोधनवाद से क्रान्तिकारी विच्छेद कर क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन पुनः क्रान्तिकारी मार्ग पर अग्रसर हुआ।

लेकिन यह दुर्भाग्य ही था कि संशोधनवाद से स्पष्टतः संबंध-विच्छेद के बावजूद देश के सभी क्रान्तिकारी कम्युनिस्टों को अपने में समेट कर आगे बढ़ने वाली एकीकृत क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी अस्तित्व में न आ सकी। भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (मार्क्सवादी-लेनिनवादी) के गठन के रूप में 1969 में हुआ एक प्रयोग भी अपनी अंतर्निहित कमजोरियों के कारण न केवल देश में पार्टी के बाहर रह गये क्रान्तिकारियों को स्वयं में समेटने में असफल रहा, बल्कि इसके विपरीत यह अपनी एकता भी बरकरार नहीं रख सकी और भारतीय कम्युनिस्ट आंदोलन में फूट-दर-फूट का एक दुखद सिलसिला चल पड़ा। सी.पी.आई.(एम.एल.) से बाहर रह गये हिस्से भी बिखराव के इस सिलसिले से बच नहीं सके।

हालांकि पिछले दशक में जहां एक तरफ कुछ क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट ग्रुपों में एकता के रुप में पुनर्एकीकरण की दिशा में कुछ सकारात्मक संकेत मिले हैं, वहीं कुछ ग्रुपों में बिखराव का सिलसिला जारी ही रहा है। कुल मिलाकर भारत का क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन वर्तमान स्थिति में भी एक एकीकृत कम्युनिस्ट पार्टी के निर्माण के लक्ष्य से बहुत पीछे रह गया है।

पूँजीपति वर्ग के भीतर तो स्वार्थों की टकराहट के कारण इसकी कई पार्टियों का अस्तित्व में बना रहना समझ में आता है लेकिन सर्वहारा वर्ग के भीतर तो स्वार्थों की ऐसी टकराहट नहीं होती और सर्वहारा वर्ग के दूरगामी हित एक होने के कारण उसकी किसी भी दशा में एक ही क्रान्तिकारी पार्टी हो सकती है। और ऐसी ही एकीकृत क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी का गठन व निर्माण किसी भी कम्युनिस्ट का पहला लक्ष्य होना चाहिए।

पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा को आज की सच्ची क्रान्तिकारी सर्वहारा विचारधारा के रुप में अपना मार्गदर्शक सिद्धान्त मानती है और स्वयं को भारत के क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन का एक अंग समझती है। भारत में सर्वहारा के हित में क्रान्तिकारी संघर्ष छेड़ने के उपकरण के रुप में, एकीकृत अखिल भारतीय क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के गठन की दिशा में अपना क्षमताभर योगदान करना पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) का केन्द्रीय कार्यभार है। इस केन्द्रीय कार्यभार को अंजाम देने की प्रक्रिया के रुप में पुनर्गठन कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) क्रान्तिकारी आंदोलन के अन्य ग्रुपों से सैद्धान्तिक वाद-विवाद कर एकता प्रयास को आगे बढ़ाने और स्वयं अपने स्तर पर अपनी क्षमताभर सर्वहारा संघर्षो को आगे बढ़ाने के व्यावहारिक कार्यो को अंजाम देने की दोहरी प्रक्रिया को ही ठीक मानती है और उसे अंजाम देने के लिए प्रयासरत है।

अपने मुख-पत्र 'लाल सलाम' अंक -1 (जनवरी, 2000) के सम्पादकीय में हमने भारतीय क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन की समस्याओं पर चर्चा करते हुए क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन की एकता प्रक्रिया के बारे में एक प्रस्ताव रखा था और उस सिलसिले में किसी भी पहल में अपनी क्षमताभर योगदान के लिए संकल्पबद्धता जाहिर की थी। इस प्रस्ताव को रखने के बाद अब तक के करीब डेढ़ वर्षों में इस दिशा में कोई भी सार्थक प्रगति नहीं हो सकी है। इसका कारण एक तो यह है कि क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन के किसी भी कोने से इस दिशा

में न तो हमें कोई प्रतिक्रिया मिली और न ही ऐसा कोई प्रयास हुआ जिसमें हम हिस्सेदारी कर सकते, और दूसरी तरफ यह अकेले हमारे जैसे छोटे संगठन की क्षमता के बाहर था कि समग्र क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन के सभी ग्रुपों के बीच सार्थक बातचीत के लिए अपने बलबूते पर कोई प्रयास कर सकें। हां! अपने स्तर पर कम्युनिस्ट आंदोलन की समस्याओं और मतभेद के बिन्दुओं पर बहस की शुरुआत करने और एक राय बनाने की ओर बढ़ने के उद्‌देश्य से अपने मुख-पत्र 'लाल सलाम' में हम इस विषय पर अपनी राजनीतिक अवस्थिति रखते रहे हैं।

इसी दौरान हम इस निष्कर्ष पर पहुॅचे कि यदि समग्र आंदोलन की एकता के लिए प्रयास करना अभी संभव नहीं हो रहा हो, तो फिर बेहतर यही होगा कि आंदोलन के वे विभिन्न ग्रुप आपस में बातचीत शुरु करें जिनके बीच मतभेद तुलनात्मक रुप से कम हैं। इसी निष्कर्ष के अनुरुप हम अपनी पहलकदमी पर सर्वप्रथम उन क्रान्तिकारी ग्रुपों से एकता की दिशा में बातचीत आगे बढ़ाने की पहलकदमी लेते हुए प्रस्ताव रख रहे हैं, जोः

- मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ विचारधारा को अपना मार्गदर्शक सिद्धान्त स्वीकार करते हैं।
- भारत को मूलतः एक पूॅजीवादी देश मानते हुए यहां समाजवादी क्रान्ति की मंजिल को स्वीकार करते हैं।
- क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के मूलतः गुप्त सांगठनिक ढांचे के सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं।
- जनवादी केन्द्रीयता की सांगठनिक कार्यशैली पर कार्य करते हों और इस आधार पर जिसमें पेशेवर क्रान्तिकारियों के नेतृत्व में कम से कम एक शीर्ष कमेटी कार्यरत हो। जो पार्टी-संगठन वर्तमान में इस शर्त को पूरा न करते हों उनसे हम उम्मीद करेंगें कि वह जल्द ही लेनिनवादी ढांचा गठित कर एकता की दिशा में बढ़ेंगे।

उपरोक्त शर्तें, प्रस्तावित एकता प्रयास की प्रक्रिया के लिए हमारी न्यूनतम शर्तें हैं। हम जानते हैं कि इस दायरे के भीतर आने वाले संगठनों के बीच भी- विचारधारा व कार्यक्रम के प्रश्नों पर मोटी एकता के बावजूद- गंभीर मतभेद मौजूद हैं। और इन मतभेद के मुद्दों पर हमारी भी निश्चित राय है। मतभेद के इन बिन्दुओं पर पहले ही अपनी अवस्थिति रख कर जहां हम 'बैल के आगे बैलगाड़ी बांधने' की कहावत चरितार्थ नहीं करना चाहते हैं, वहीं इनमें से किसी भी महत्वपूर्ण मुद्दे को किनारे रखकर हम किसी अवसरवादी एकता के कतई पक्षधर नहीं हैं। हम हर मुद्दे पर अपनी राय रखते हुए भी खुले दिमाग से बातचीत के लिए तैयार हैं।

हम यह भी जानते हैं कि एकता की प्रक्रिया तुरत-फुरत में पूरी न होकर लम्बे वाद-विवाद के दुरूह, कठिन, उतार-चढ़ाव वाले रास्ते से गुजर कर पूरी होगी और भावी एकता के पहले एकीकृत संगठन में शामिल होने वाले अंशों के बीच न केवल विचारधारात्मक-राजनीतिक धरातल पर एकता कायम हो जानी चाहिए बल्कि उससे आगे बढ़कर इन अंशों के व्यावहारिक चरित्र व सांगठनिक कार्यशैली भी वास्तविक धरातल पर, केवल मौखिक सहमति के धरातल नहीं, एक जैसी हो जानी चाहिए। जाहिर है यह प्रक्रिया लम्बी चलने वाली प्रक्रिया होगी।

इसलिए हम इस प्रक्रिया को आगे चलाने के लिए ऊपर वर्णित शर्तों के दायरे के भीतर आने वाले बिरादर संगठनों के समक्ष एक Coordination Committee के गठन का प्रस्ताव रखते हैं। हमारी समझ में इस Coordination Committee में भावी एकता की दिशा में बातचीत ठीक दिशा में आगे बढ़ सके, इसके लिए निम्नलिखित तौर-तरीकों पर सभी हिस्सेदार संगठनों की सहमति होनी चाहिए:

(i) Coordination Committee में विभिन्न भागीदार संगठनों के प्राधिकृत प्रतिनिधियों द्वारा रखी गयी लिखित अवस्थितियां ही उन संगठनों की औपचारिक अवस्थिति मानी जायेंगी।

(ii) वार्ताओं के कार्यवृत व उस दौरान पेश की गयी अवस्थितियां लिखित में तैयार की जायेंगी। अलिखित अवस्थितियों का कोई महत्व नहीं होगा। लिखित अवस्थितियों को ही वास्तविक अवस्थिति माना जायेगा।

(iii) इस एकता प्रक्रिया में शामिल संगठनों को वार्ताओं के दौर में भी अन्य मंचों पर एक दूसरे की खुली आलोचना का अधिकार होगा।

(iv) वार्ताओं के दौरान बहुपक्षीय व द्विपक्षीय, दोनों प्रकार की, बातचीत के लिए अवसर उपलब्ध होगा।

एक बार पुनः यह दोहराते हुए कि सच्ची क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट भावना के साथ, खुले दिमाग से बहस-मुबाहिसा करते हुए बिरादर संगठनों के साथ विचारधारात्मक, राजनीतिक एकता स्थापित करते हुए, सांगठनिक एकता के लक्ष्य को हासिल करने की दिशा में हम अपनी क्षमता भर योगदान अवश्य करेंगें, हम यह प्रस्ताव प्रस्तुत कर रहे हैं।

संबंधित बिरादर संगठनों की ओर से हमें इसकी सार्थक प्रतिक्रिया का इंतजार रहेगा।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,
सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)

दिनांकः 15 सितम्बर, 2001

I

केन्द्रीय कमेटी, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) से हुयी खतो-किताबत

I-A

प्रति,

सचिव,
केन्द्रीय कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय साथी,

अब से लगभग छः माह पहले सितंबर 2001 में हमने आपके पास एकता प्रस्ताव भेजा था। तब से लेकर अब तक आपने उस पर हमें कोई प्रतिक्रिया नहीं भेजी। हम आप से किसी न किसी प्रकार के औपचारिक जवाब की अपेक्षाएं रखते हैं और पत्र का जवाब ही न देना किसी भी क्रान्तिकारी संगठन की ओर से जनवादी व्यवहार नहीं है। आपके जवाब की प्रतीक्षा में,

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 20 अप्रैल, 2002

सचिव
पुनर्गठन कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)

I-B

प्रति,
सचिव, पुनर्गठन कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)

क्रान्तिकारी अभिवादन!

आपके संगठन की नेतृत्वकारी टीम की ओर से भेजा गया पत्र मिला। इस संबंध में चन्द बातें हम रखना चाहते हैंः

1. हमें खेद है कि कुछ अपरिहार्य कारणों से आपके पत्र का जवाब देने में विलम्ब हो रहा है।
2. यह बेहतर होता कि हमारे संगठन की कार्यप्रणाली के बारे में अवांछित निष्कर्षों तक पहुंचने के पहले आप विलम्ब के कारणों को जानने की पहले कोशिश करते।
3. आपके प्रस्ताव में अभिव्यक्त सरोकारों का स्वागत करते हुए हम अपने अनुभव से भी आप को अवगत कराना चाहते हैं। दस साल पहले सम्पन्न हमारे संगठन की कांफ्रेंस ने क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट आंदोलन में व्याप्त फूट-बिखराव की स्थिति पर गंभीरता से विचार किया था और एकता की जरुरत को रेखांकित करते हुए समूचे क्रान्तिकारी खेमे के सामने ठोस प्रस्ताव भी रखे थे। लेकिन हमें अफसोस के साथ कहना पड़ रहा है कि अभी तक इसके बारे में किसी संगठन ने कोई प्रतिक्रिया देना भी जरुरी नहीं समझा है।
4. जहां तक कम्युनिस्ट लीग के विभिन्न धड़ों के बीच द्विपक्षीय वार्ता का सवाल है चन्द बातों को मद्देनजर रखना जरुरी होगाः
   - ऐसी किसी द्विपक्षीय वार्ता की एक आवश्यक शर्त बनेगी कि फरवरी-मार्च 1989 में एकताबद्ध कम्युनिस्ट लीग में सामने आयी सिद्धान्तविहीन तथा अवांछित पहली फूट का नये सिरे से अवलोकन किया जाय, जिसने कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी खेमे को विशेषकर समाजवादी क्रान्ति की लाइन के प्रस्तोताओं को भारी नुकसान पहुंचाया।
   - यह भी साफ है कि उपरोक्त फूट के बाद एक लम्बा अंतराल गुजर चुका है जिस दौरान कम्युनिस्ट लीग के विभिन्न धड़ों ने वैचारिक व व्यावहारिक स्तर पर लम्बी यात्रा तय की है। निश्चित ही एकता की इच्छा से प्रेरित किसी भी प्रयास को यह समझना पड़ेगा कि इस प्रक्रिया में तुरत-फुरत कुछ हासिल नहीं हो सकता तथा सम्बंधित समूहों को वैचारिक संघर्षों तथा एक-दूसरे के अनुभव से सीखने का धैर्यपूर्ण रास्ता अपनाना पड़ेगा।
5. अन्त में, द्विपक्षीय बातचीत को चलाने के लिए आप द्वारा ली गयी पहल का स्वागत करते हुए हम आपको सूचित करना चाहते हैं कि जून 2002 के उत्तरार्द्ध में या जुलाई 2002 में किसी समय बातचीत के प्रारंभिक दौर के लिए मिला जा सकता है। हमारे लिए यह सुविधाजनक होगा कि उपरोक्त बातचीत ---- में हो।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ
(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 16 मई, 2002

सचिव
केन्द्रीय कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)

I-C

प्रति,

सचिव,
केन्द्रीय कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय कामरेड,

आप द्वारा 16.05.2002 को भेजा गया जवाब मिला। वार्ताओं के लिए आप की स्वीकारोक्ति से हमें प्रसन्नता हुई।

1989 की फूट या किसी अन्य विषय पर बात करने से हमें कोई गुरेज नहीं है और न ही हम यह मानते हैं कि एकता तुरत-फुरत की जा सकती है। एकता के लिए धैर्यपूर्ण संघर्ष निहायत जरुरी है, ऐसा हमारा भी मानना है।

हमारी राय में 15 से 24 जुलाई के दौरान किन्हीं भी दो-तीन दिन की प्रारम्भिक वार्ताओं के लिए हमारे दोनों संगठनों की सर्वोच्च कमेटियों के सदस्य मिलें। इस बैठक की मेजबानी हम करना चाहेंगे परन्तु हमें अफसोस है कि ---- में बैठक के लिए कोई स्थान हमारे पास नहीं है, ऐसे में हम बैठक --- के बाहर ---- में ही आयोजित करना चाहेंगे, परन्तु यदि आप का कोई वैकल्पिक प्रस्ताव हो तो हमें जरूर बतायें।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 08 जून 2002

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

I-D

प्रति
सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय कामरेड,

आप द्वारा 8 जून को भेजा गया पत्र मिला।

प्रारम्भिक वार्ताओं के लिए संगठन की केन्द्रीय कमेटी की तरफ से दो सदस्य भेजे जा रहे हैं। 20 से 24 जुलाई के बीच ----- के इलाके में कहां पहुंचना है इसके बारे में आप सूचित कर सकेंगे तो हमें प्रसन्नता होगी।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 01 जुलाई 2002

सचिव,
केन्द्रीय कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

I-E

कार्यवृत

विषयः R C- CLI (ML) और C C- CLI (ML) के बीच एकता प्रक्रिया की प्रथम वार्ता।

दिनांकः 20 जुलाई 2002 से 21 जुलाई 2002.

कार्यसूचीः 1. R C द्वारा भेजे गये प्रस्ताव पर प्रतिक्रिया की रिपोर्टिंग।
2. दोनों संगठनों के बारे में संक्षिप्त परिचय।
3. 89 की टूट-फूट व बाद की फूटों का मूल्यांकन व रिपोर्टिंग।
4. दोनों पूर्व-पार्टी संगठनों के बीच विचारधारात्मक, राजनीतिक व अन्य मतभेदों पर बातचीत/ मतभेदों को कैसे हल किया जाय?

■ 1989 के पार्टी विभाजन में दोनों पक्षों की अवस्थिति व मतभेद–

C. C., C. L. I. (M.L.)

- R C द्वारा प्रति षडयंत्र की थीसिस को खारिज करना सकारात्मक है।
- फूट को अन्तिम तौर पर रामनाथ, प्रकाश धड़े द्वारा अंजाम दिये जाने की पुनर्गठन कमेटी की अवस्थिति भी सकारात्मक है।
- यह कहना कि तत्कालीन CC के अन्य लोग भी फूट के लिए जिम्मेदार हैं – गलत है– क्योंकि तब दो लाइन संघर्ष सामने ही नहीं आया था।
- हम फूट के लिए रामनाथ, प्रकाश के राजनीतिक कैरियरिस्ट होने, उनकी गलत मंशा को जिम्मेदार मानते हैं।
- रामनाथ द्वारा फूट की घोषणा के बाद 'काडर कांफ्रेंस' का कोई औचित्य नहीं था क्योंकि संगठन में विभाजन के बाद कांफ्रेंस नहीं बुलायी जा सकती।
- इस फूट के व्यापक कारण पूरे आंदोलन की आज की स्थिति– CLI की कार्य प्रणाली व सांगठनिक ढांचे तथा कार्यशैली में निहित हैं।

R. C., C.L.I. (M.L.)

- रामनाथ-प्रकाश धड़ा फूट के लिए अंतिम तौर पर जिम्मेदार है, मूलतः जिम्मेदार नहीं है। षडयंत्र CC के बहुमत द्वारा किया जा रहा था या नहीं यह खुला सवाल है, इसको तत्कालीन CC के दुबारा आमने-सामने बैठने पर ही ठीक से समझा जा सकता है। लेकिन रामनाथ की प्रति षडयंत्र की थीसिस को हम गलत मानते हैं। षडयंत्र से निपटने का तरीका भी विचारधारात्मक, राजनीतिक संघर्ष ही होगा।

- फूट के मूल में राजनीतिक मुद्दे थे चाहे वो अभी खुलकर सामने नहीं आये थे। कोई राजनीतिक संगठन गैर-राजनीतिक फूट का शिकार नहीं हो सकता। दो लाइन संघर्ष की मौजूदगी से इंकार करना गलत है।
- रामनाथ- प्रकाश राजनीतिक कैरियरवादी नहीं हैं और उनका राजनीतिक कैरियरिज्म फूट के लिए जिम्मेदार नहीं है।
- CC के बहुमत द्वारा राजनीतिक भोलेपन की आड़ में, पार्टी-संगठन की सदस्यता को खारिज करने को तकनीकी गलती मानना गलत है। यह एक राजनीतिक गलती है इसकी जड़ों को तलाशना चाहिए।
- रामनाथ-प्रकाश धड़े द्वारा फूट की घोषणा करने के बाद भी CC के बहुमत द्वारा संगठन को फूट से बचाने के लिए प्रयास किये जा सकते थे और अपने प्राधिकार का इस्तेमाल करके 'काडर कांफ्रेंस' बुलायी जा सकती है। इन प्रयासों से संगठन में मौजूद राजनीतिक मतभेदों को सतह पर लाया जा सकता था।
- CC के बहुमत द्वारा '89 की फूट के सार-संकलन में व्यक्ति केन्द्रित विश्लेषण पद्धति अपनायी जाती है जो कि गलत है। फूट का राजनीतिक सार-संकलन किया जाना चाहिए। आंदोलन व पार्टी-संगठनों की स्थिति से प्रस्थान करके ही व्यक्ति की भूमिका को समझा जाना चाहिए।
- C.C., C.L.I. की, इतिहास का सार-संकलन करने की पद्धति गलत है। यह सामान्य में राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय कम्युनिस्ट आंदोलन और राजनीति-विचारधारा में अवस्थिति करके घटनाओं के मूल्यांकन की पद्धति को जायज ठहराते हैं लेकिन 89 के विशिष्ट संदर्भ में इन सभी वजहों को गायब करके व्यक्तियों को ही मूल्यांकन का आधार बनाते हैं।

■ दोनों पार्टी संगठनों के बीच विचारधारात्मक-राजनीतिक-सांगठनिक मतभेदों पर बातचीत-

- R. C., C.L.I. द्वारा C.C., C.L.I. से मतभेदों को रखते हुए 'लाल-सलाम' के तीसरे अंक में C.C., C.L.I. की चौथी कांफ्रेंस के दस्तावेजों की आलोचना के प्रमुख बिंदुओं को रखा गया। इन पर दोनों पक्षों ने अवस्थितियों का प्रारम्भिक आदान-प्रदान किया। दोनों पक्ष अपनी-अपनी अवस्थितियों पर कायम रहे। दस्तावेज के अलावा पेशेवर क्रान्तिकारियों की अवधारणा पर बात की गयी।
- दोनों पक्षों का मानना है कि यह 'एकता वार्ता' की प्रक्रिया एक सकारात्मक शुरुआत है और इसे आगे बढ़ाया जाना चाहिए।
- C.C., C.L.I. द्वारा यह जिम्मेदारी ली गयी कि वह सितम्बर माह में बातचीत आगे बढ़ाने के लिए पहल लेंगे और दूसरे पक्ष को सूचित करेंगे।

(हस्ताक्षर)

प्रतिनिधि, R. C., C.L.I. (M.L.)
प्रतिनिधि, C. C., C.L.I. (M.L.)

दिनांकः 21 जुलाई, 2002

I-F

प्रति,
सचिव,
केन्द्रीय कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय साथी,

वर्ष 2001 के उत्तरार्द्ध में हमने एकता की पहल की थी। इस पहल पर आपकी प्रतिक्रिया बिलम्ब से मिली, लेकिन वह सकारात्मक थी। वर्ष 2002 की गर्मियों में हमारे-आपके बीच एकता वार्तायें हुई।इन वार्ताओं के दौरान आपने इस प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की अपनी इच्छा भी जाहिर की। अनौपचारिक तौर पर यह भी बात हुयी कि अक्टूबर, 2002 में आपकी केन्द्रीय कमेटी की बैठक के पश्चात हमें आपका निश्चित उत्तर मिल जायेगा कि अगले चक्र की वार्तायें कैसे और कब की जायें।

हमें खेद है कि अक्टूबर, 2002 को बीते अरसा हो चुका है। उसके बाद कई चक्र के टेलीफोन सम्पर्क के बावजूद हमें आप से अब तक कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली है। ऐसा रुख गैर-जिम्मेदाराना है। यह क्रांति के प्रति व्यग्रता के अभाव को भी दर्शाता है। आपको अपनी इस कमी को ठीक करना चाहिए और हमसे एकता प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए आगे आना चाहिए।

हम नवम्बर, 2003 तक आपकी तरफ से सकारात्मक प्रतिक्रिया का इंतजार करेंगे। यदि तब तक हमें आपकी कोई सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली तो हम मान लेंगे कि एकता में आपकी कोई दिलचस्पी नहीं है तथा एकता वार्ताऐं टूट चुकी हैं। ऐसी हालत में हम एकता वार्ताओं की मर्यादाओं से बंधे नहीं रहेंगे। तब देश में पार्टी–गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए हम स्थितियों के अनुरुप संघर्ष के तौर-तरीके निकालेंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 15 जून, 2003

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

I-G

प्रति,

सेक्रेटरी,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

कामरेड,

आपका पत्र मिला।

पत्र में लिखी बातों के सिलसिले में अपनी राय से हम आप को जल्द ही अवगत करा देंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,
आपका,

सेक्रेटरी,
केन्द्रीय कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा० ले०)

(यह पत्र अगस्त, 2003 में प्राप्त हुआ।)

I-H

प्रति,

सेक्रेटरी,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

कामरेड,

आपके साथ चली बातचीत की पुनर्समीक्षा के आधार पर हम लोग इस नतीजे पर पहुंचे हैं कि फिलवक्त आपके साथ बातचीत आगे चलाने का औचित्य नहीं है।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,
आपका,

सेक्रेटरी,
केन्द्रीय कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा० ले०)

(यह पत्र 28 दिसम्बर, 2003 को प्राप्त हुआ।)

II

सामान्य परिषद, भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.) से हुयी खतो-किताबत

II-A

प्रति,

सचिव,

पुनर्गठन कमेटी,

भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय साथी,

आपका 15 सितम्बर, 2001 को लिखा पत्र हमें 14 अक्टूबर, 2001 को प्राप्त हुआ।

आपके एकता प्रस्ताव व उसकी शर्तों से अवगत हुए और इस संबंध में आपके विचारों को जानने का मौका मिला।

हमारे आपके बीच एकता के काफी प्रयास हुए थे जो सफल नहीं हो सके। आपके और हमारे संगठनों के बीच वास्तविक आवयविक एकता के समाप्त हो जाने के बाद भी एक लम्बे समय तक इस आशा में और इस प्रयास में औपचारिक सांगठनिक एकता बनाये रखी गयी और बातचीत जारी रखी गयी कि हम अपने मतभेदों को औपचारिक एकता को भंग किये बिना ही सुलझा पाने में सफल हो जायेंगे और फिर पूर्ण सांगठनिक एकता कायम कर ली जायेगी। परन्तु हम जानते हैं कि हमारी सदिच्छाओं के बावजूद ऐसा नहीं हो सका। ऐसी स्थिति में पुनः एक औपचारिक मंच पर एकत्रित हो जाने मात्र से ही फिर कोई एकता प्रक्रिया आरम्भ नहीं हो सकती है। हमारा मानना है कि आज एकता का कोई भी प्रयास वहीं से शुरु हो सकता है, जहां से यह कड़ी टूटी थी। मतभेद के बिन्दु भी काफी हद तक हमारे बीच स्पष्ट हैं। अपनी विचारधारात्मक, राजनीतिक अवस्थितियों को व्यवहार में लागू करने के लिए आपको काफी समय मिल भी चुका है। हमने भी कुछ प्रयास किये हैं। अपने कामों का सार-संकलन प्रस्तुत करते हुए आपको बहस चलानी चाहिए। हमारे लिए चिन्ता का विषय यह नहीं है कि हम आपके प्रस्ताव की न्यूनतम शर्तों पर खरे उतरते हैं या नहीं, बल्कि चिंता का विषय आपके द्वारा की गयी वह ‘‘उम्मीद’’ है जो आपकी मनोगतवादी सोच और रूपवादी पहुंच को अभिव्यक्त करती है।

आप एक पार्टी पत्रिका का नियमित प्रकाशन कर रहे हैं। आप जानते हैं कि आपके विचारधारा और कार्यक्रम पर हमसे गम्भीर मतभेद हैं और इन मतभेद के मुद्दों पर आपकी निश्चित राय भी है तब आपको इधर-उधर बातें करने के बजाय अपने अनुभवों के सार-संकलन के आधार पर हमारे बीच बहस को आगे बढ़ाना चाहिए। यदि यह बहस आगे बढ़ती है तो यह ‘‘बैल के आगे बैलगाड़ी बांधना’’ नहीं होगा, बल्कि इससे आंदोलन की समझदारी बढ़ेगी और आपकी अवस्थिति भी स्पष्ट होगी।

ऐसा करने के बजाय आपने प्रस्ताव में बातचीत के लिए कुछ वैधानिक और सांगठनिक शर्तें रखी हैं। हम लोगों के अलग होने के कारण महज वैधानिक और सांगठनिक नहीं थे, बल्कि कुछ गम्भीर विचारधारात्मक और राजनीतिक मतभेद थे जो कामों के सार-संकलन और आलोचना-आत्मालोचना की प्रक्रिया के दौरान उभरकर स्पष्ट रूप से सामने आये थे। इन समस्याओं से हम आज भी जूझ रहे हैं।

कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों की एक कोर का निर्माण आज भी हमारे लिए चुनौती बना हुआ है। हम समझते हैं कि बिना उपयुक्त अंतर्वस्तु के जल्दी से जल्दी किसी नेतृत्वकारी कमेटी का चुनाव भर कर लेने से समस्याओं का समाधान नहीं किया जा सकता है। विचारधारात्मक, राजनीतिक मतभेदों का कोई सांगठनिक समाधान नहीं हो सकता है।

इसलिए एकता के पुराने सार-संकलन और अलग होने के बाद हुए कामों के अनुभवों के सार-संकलन के आधार पर अपने राजनीतिक, विचारधारात्मक मतभेदों को चिह्नित करके ही हम एकता की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। एकता के लिए आपका यह प्रयास इस प्रक्रिया को आगे बढ़ायेगा, ऐसी हमें आशा है।

साथ ही हम एक और समस्या की तरफ आपका ध्यान आकर्षित करना जरूरी समझते हैं। यह पत्र हमें मिलने के पहले आप हमारे संगठन के कार्यकर्ताओं के साथ ''एकता'' की मुहिम चला चुके हैं। कार्यकर्ताओं से ''एकता'' की मुहिम और हमें एकता के लिए लिखे गये आपके पत्र ने आपकी कार्यशैली को हमारे सामने अच्छी तरह अभिव्यक्त किया है। हमारे करीब दस कार्यकर्ताओं के साथ आपने हाल ही में या तो व्यक्तिगत बातचीत की है या उन्हें पत्र लिखे हैं। आपके द्वारा की गयी ये सभी कार्रवाईयां आपकी उसी कार्यशैली की पुनरावृत्ति हैं, जिनकी भर्त्सना करते हुए '97 के सम्मेलन में प्रस्ताव पारित किया था।

इससे पहले, फूट के बाद हमसे अलग होकर बने किसी भी संगठन ने इस तरह की कार्रवाई नहीं की और फूट के बाद अलग होकर अपनी विचारधारात्मक-राजनीतिक और सांगठनिक अवस्थिति को लेकर व्यवहार में लग गये। लेकिन इसके बजाय आप अभी भी लोगों से अलग-अलग बातचीत कर उसी कुत्सा प्रचार की कार्यशैली को जारी रखे हुए हैं जिसका मकसद गम्भीर राजनीतिक वाद-विवाद की जगह कार्यकर्ताओं को गुमराह करना होता है। यह एक अराजनीतिक व्यवहार है। क्योंकि आपने एकता के लिए पहल की है, इसलिए हमें लगता है कि अब आपसे हम यह उम्मीद कर सकते हैं कि आप कुत्सा प्रचार की इस कार्यशैली का त्याग करेंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 04 नवम्बर, 2001

कृते सामान्य परिषद

II-B

प्रति,

संयोजक,
सामान्य परिषद,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय साथी,

आप द्वारा 04/11/01 को लिखा गया पत्र हमें 28/01/2002 को प्राप्त हुआ। पत्र उठाने में देरी हमारी ओर से हुई है। पत्र प्राप्ति के बाद उसके जवाब में जो देरी हुई है, वह सांगठनिक व्यस्तताओं की वजह से है, इसे आप अन्यथा न लें।

सर्वप्रथम तो हमें इस बात की खुशी है कि आपने हमारे प्रस्ताव को गम्भीरता से लिया और अविलम्ब उसका जबाब दिया। इसके लिए धन्यवाद।

अब आपके जवाब के संदर्भ में।

हमें आपकी इस इच्छा से कोई परेशानी नहीं है कि जहां से आपके– हमारे संबंधों की कड़ी टूटी है, उन्हें वहीं से जोड़ने का प्रयास किया जाये। हमारे- आपके बीच सांगठनिक रिश्तों का अंत 1998 में तब हुआ जब आपने, जून '97 की कांफ्रेंस में सर्वसम्मति से तय, कांफ्रेंस का बहिष्कार किया और एकतरफा अपनी ओर से व्यवहार में एकता तोड़ी। नवम्बर 1998 में अपना फूट का दस्तावेज जारी करके आपने एकता को औपचारिक तौर ही समाप्त कर दिया। जहां तक आपकी ओर से 1995 से 1998 के दौर के संघर्ष की व्याख्या 'वास्तविक आवयविक एकता' समाप्त हो जाने के बाद भी 'औपचारिक सांगठनिक एकता' के बनाये रखने के दौर के बतौर की गयी है- इसके बारे में हमारा कहना है कि उक्त प्रस्तुति ठीक नहीं है। उस दौर की मूल बात यह है कि हमारे संगठन का रूप जस का तस बरकरार था, वह टूटा नहीं था। अंतर्वस्तु भी मूलतः बरकरार थी उसकी एकता भी नहीं टूटी थी। जून, 1997 की कांफ्रेंस ने ही इस बात को माना था कि हमारी विचारधारात्मक अवस्थितियां एक हैं, कि कार्यक्रम के सवाल पर भी कोई मतभेद नहीं हैं, जो मतभेद हैं वे कार्यशैली एवं सांगठनिक लाइन के मामलों पर हैं और इन्हीं पर संघर्ष है। तय है कि यदि आप अपने आपको संघर्ष के लिए प्रस्तुत करते तो 1998 में (या उसके थोड़े बाद) ये अंतर्विरोध हल हो जाते और हम पहले से उच्च्व एकता में बंध जाते, संगठन की अंतर्वस्तु का विकास हो जाता और तब या तो पुराना सांगठनिक रूप ही बरकरार रखा जाता या उसमें थोड़ा-बहुत फेर-बदल करके रूप व अंतर्वस्तु को एक दूसरे के अनुरूप बना लिया जाता। संघर्ष की सफल समाप्ति पर निस्संदेह आवयविक एकता (जो संघर्षों के दौरान कमजोर पड़ जाती है) में भी वृद्धि हो जाती।

हां, 1998 की गर्मियों में आपने संगठन के पुराने रूप को भी एकतरफा बदला, पहले से मौजूद विचारधारात्मक विच्युतियों को आगे बढ़ा कर औपचारिक तौर पर नई अवस्थितियां ग्रहण कीं। लेकिन तब भी, ये ऐसी बड़ी बातें नहीं थी जिन्हें 1998 की कांफ्रेंस के संघर्षों के दौरान हल नहीं किया जा सकता था। हम आपकी 1998 की कार्यवाहियों के बावजूद, आप के साथ सितम्बर, 1998 में कांफ्रेंस करने आये क्योंकि हमें सर्वहारा विचारधारा और साथियों की इंकलाबियत पर भरोसा था। लेकिन तब आपने आवयविक एकता की भाववादी व्याख्याएं करके, इसे मूल मुद्दा बनाकर साथियों को 1998 कांफ्रेंस में हिस्सेदारी करने से रोका।

आज हमें यह जानकर बेहद खुशी हो रही है कि आज आप भी मानने लगे हैं कि ''हम लोगों के अलग होने के कारण महज वैधानिक और सांगठनिक नहीं थे, बल्कि कुछ गंभीर विचारधारात्मक और राजनीतिक मतभेद थे जो कामों के सार-संकलन और आलोचना- आत्मालोचना की प्रक्रिया के दौरान उभरकर स्पष्ट रूप से सामने आये थे''। हमें इस बात की खुशी है कि अब आप अपनी पुरानी अवस्थिति छोड़कर, एक कहीं ज्यादा स्वस्थ एवं वैज्ञानिक बात करने लगे हैं। यदि आप 1998 में ही यह मानते होते कि मूल बात 'विचारधारात्मक और राजनीतिक मतभेद' हैं, तो आप बेखौफ होकर 1998 कांफ्रेंस का सामना करते और अपनी सही विचारधारा एवं राजनीति पर कांफ्रेंस को खड़ा करते। लेकिन उस वक्त आपने ''गुट-गुट'' का हल्ला मचाकर न केवल वैधानिक और सांगठनिक किस्म के मतभेदों को ही केन्द्रीय मुद्दा बनाया बल्कि 'भरोसे के अभाव', 'व्यक्तिगत मनमुटाव' आदि को मुख्य बातें बताकर संगठन के साथियों को अपने साथ खड़ा किया न कि विचारधारात्मक एवं राजनीतिक मतभेदों को केन्द्र में रखकर।

इस पूरे मामले में गलतफहमी से बचने के लिए हम एक बार फिर पार्टी- इतिहास के तथ्यों को दोहरा देना आवश्यक समझते हैं। 1995 से जून, 1997 तक संगठन में मतभेदों का दायरा कार्यशैली एवं सांगठनिक लाइन के कुछ मुद्दों तक सीमित था। जून '97 कांफ्रेंस की समाप्ति पर का० रामनाथ ने जो आधिकारिक आडियो कैसेट जारी किये उनमें उन्होंने विचारधारात्मक एवं कार्यक्रम संबंधी विषयों पर कुछ नई प्रस्थापनायें प्रस्तुत करके मतभेदों के

दायरे को बढ़ा दिया, लेकिन तब भी इन नयी अवस्थितियों की अहमियत विच्युतियों से ज्यादा नहीं थी जिन्हें संगठन के भीतर संघर्ष करके ठीक किया जा सकता था। 1998 की गर्मियों में संगठन के पुराने रूप को एकतरफा भंग करके तथा 'महान-बहस' पुस्तक की प्रस्तावना में औपचारिक तौर पर नयी विचारधारात्मक अवस्थिति ग्रहण करके आपने मतभेदों को अपनी ओर से और बढ़ाया। परंतु हमें भरोसा था कि 1998 की कांफ्रेंस इन्हें भी हल करने का रास्ता निकाल लेगी। 1998 कांफ्रेंस से पलायन करके आप एकतरफा एकता तोड़ते हुए नवम्बर 1998 में हमसे सांगठनिक तौर पर अलग हो गये। यदि आप आज कड़ी को जोड़ना चाहते हैं तो आइये साथ बैठकर अब भी मतभेदों को सुलटा लिया जाए।

अपने पत्र में आपका कहना है कि ''आप (यानि पुनर्गठन कमेटी) एक पार्टी पत्रिका का नियमित प्रकाशन कर रहे हैं। आप जानते हैं कि आपके विचारधारा और कार्यक्रम पर हमसे गम्भीर मतभेद हैं और इन मतभेद के मुद्दों पर आपकी (पुनर्गठन कमेटी) निश्चित राय भी है तब आपको इधर-उधर बातें करने के बजाय अपने अनुभवों के सारसंकलन के आधार पर हमारे बीच बहस को आगे बढ़ाना चाहिए। यदि यह बहस आगे बढ़ती है तो यह ''बैल के आगे बैलगाड़ी बांधना'' नहीं होगा, बल्कि इससे आंदोलन की समझदारी बढ़ेगी और आपकी अवस्थिति भी स्पष्ट होगी''। निस्संदेह हम एक पार्टी पत्रिका का नियमित प्रकाशन कर रहे हैं। इस पत्रिका में आपकी विचारधारात्मक एवं राजनीतिक अवस्थितियों पर टीका-टिप्पणी करने से हमें कोई गुरेज नहीं है बल्कि अपनी अवस्थिति को स्पष्ट करने के लिए हम ऐसा करना भी चाहेंगे। परन्तु हमारी समस्या यह है कि आप आंदोलन में, विचारधारा एवं राजनीति के मामलों में औपचारिक तौर पर कोई अवस्थिति देते ही नहीं हैं। आप न तो कोई दस्तावेज जारी करते हैं, न कोई पत्रिका निकालते हैं (1997 की आधिकारिक आडियो कैसेट की अवस्थितियों से भी आपने बाद में 'loud thinking' बताकर अपना पिंड छुड़ाने की कोशिश की) तब हम चाह के भी आपके बारे में लिखें तो क्या लिखें! हमारे लिए वह बड़ा मुबारक दिन होगा जब आप राजनीति एवं विचारधारा पर अपनी औपचारिक लिखित अवस्थितियां आंदोलन में देने का साहस जुटायेंगे। हमें बेसब्री से उस दिन का इंतजार है।

यदि हमने आपसे यह ''उम्मीद'' रखी है कि आप जल्द से जल्द अपने पार्टी-संगठन को पेशेवर क्रान्तिकारियों की एक शीर्ष कमेटी के मातहत ले आयेंगे तो यह कहीं से भी गलत नहीं है। यदि आप ऐसा करते हैं तो यह आपके, हमारे और समस्त आंदोलन के हित में होगा क्योंकि आपकी शीर्ष कमेटी का 'सामान्य परिषद– सलाहकार' रूप आपके ही संगठन की क्रान्तिकारी अंतर्वस्तु से बेमेल है, यह आपके संगठन के क्रान्तिकारी रूपान्तरण में नेतृत्वकारी नहीं बल्कि बाधक है। अपने पार्टी-संगठन में एक कम्युनिस्ट कोर के निर्माण एवं सुदृढ़ीकरण की आपकी सदिच्छाएं बिल्कुल ठीक हैं। परंतु हमारी आपसे शिकायत ही यही है कि इसके लिए जो मूल काम आपको करने चाहिए आप उन्हें नहीं कर रहे हैं। 'सामान्य परिषद– सलाहकार' का नेतृत्व न तो विचारधारात्मक कार्यों को गम्भीरतापूर्वक कर रहा है और न ही इनके आईने में मजदूरों -मेहनतकशों के बीच सांगठनिक काम को। इसके बजाय आप कम्युनिस्ट कोर के निर्माण के लिए अभी भी व्यक्ति-केन्द्रित विश्लेषणों में लिप्त हैं एवं मानवीय दुर्बलताओं को सुधारने के लिए भाववादी उपकरणों पर ही जोर देते हैं। हम आपसे अब भी ''उम्मीद'' करते हैं कि आप अपनी इस पहुंच को बदलेंगे।

जहां तक आपकी यह शिकायत है कि हम आपके साथ के कार्यकर्ताओं से मिलते हैं, तो अपनी इस कार्यवाही को हम सही समझते हैं और आपकी शिकायत को नावाजिब। इस मामले में पहली बात यह है कि आपके साथ जुड़े हुए कार्यकर्ता आपकी जागीर की रियाया नहीं हैं जिनसे रिश्ते रखना धर्म के खिलाफ हो। ये कार्यकर्ता और हम एक ही आंदोलन के सिपाही हैं और आपस में राजनीतिक रिश्ते रखने का दोनों ही पक्षों को पूरा-पूरा अधिकार है। ये कार्यकर्ता वैसे भी हमारा साहित्य पढ़ते हैं और हमसे राजनैतिक संवाद करते हैं। आपको इस बात से डरने की कोई जरुरत नहीं है कि इन मुलाकातों में आपके बारे में ही चुगलबाजी होती होगी,

कुत्सा प्रचार से कहीं बेहतर विषय दोनों ही पक्षों के पास बातचीत के लिए होते हैं। इन कार्यकर्ताओं में से किसी को अपनी राजनीति से सहमत कर अपने साथ खड़ा कर लेना हमारा हक है। आप भी इस हक को इस्तेमाल करते रहे हैं। आज आपके ही संगठन में अनेक ऐसे लोग हैं जो कि पहले दूसरे संगठनों में थे और जिन्हें अपनी राजनीतिक एवं सांगठनिक लाइन से सहमत करके आपने अपने संगठन में शामिल किया, तब आपको अपनी बारी में परेशानी क्यों हो रही है? इसी मामले में दूसरी बात यह है कि 1998-99 में आपने पूर्वांचल और पश्चिम में तमाम अड़ंगे फंसाकर अपने साथ जुड़े कार्यकर्ताओं के सामने हमें अपना पक्ष रखने से रोका, जबकि हमने तराई में बिना शर्त आपकी बैठक का इंतजाम किया था। ऐसी हालत में तभी से यह हमारी खुली अवस्थिति रही है कि हम उस किसी भी साथी से बात करेंगे जो हमारी बात सुनना चाहेगा। विगत दिनों में आपके साथ जुड़े कुछ कार्यकर्ताओं ने हमारी बात सुनने की इच्छा जाहिर की तो हमने उनसे बात की। वे या कोई और साथी यदि भविष्य में भी ऐसी इच्छा जाहिर करेंगे तो हम आगे भी यह गुनाह करेंगे। वैसे इसके लिए अपनी ओर से हम भी पहल ले सकते हैं।

बहरहाल, आपने हमारे पत्र का लिखित जवाब दिया, यह अच्छी बात है। लेकिन आपकी प्रतिक्रिया नकारात्मक है, इसका हमें अफसोस है। यदि आपको हमारा प्रस्ताव ठीक नहीं लग रहा था, तो आपको अपनी ओर से एकता के लिए कोई सकारात्मक रास्ता सुझाना चाहिए।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 20 अप्रैल, 2002

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

II-C

प्रति,

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)

प्रिय साथी,

आपके दिनांक 20 अप्रैल, 2002 के पत्र और उसके बाद आपके साथ हमारे प्रतिनिधि की बातचीत के बाद हमने बातचीत की प्रक्रिया को आगे जारी रखने का फैसला किया है। दोनों संगठनों के बीच प्रस्तावित बातचीत के लिए आगामी 10 से 20 अगस्त, 2002 की तिथियां हमारे लिए सुविधाजनक रहेंगी। हमारी समझ से शुरुआती बातचीत के लिए दो या तीन दिन का समय पर्याप्त होगा। आगे की बातचीत के लिए सुविधानुसार इस अवधि को बढ़ाया जा सकता है या आगे की तिथियां तय की जा सकती हैं। अन्तिम तिथियों और जगह के बारे में जानकारी कृपया उसी स्थान पर छोड़ दें जहां से आपने यह पत्र उठाया है।

आशा है, शीघ्र मुलाकात होगी।

गर्मजोशी भरे अभिवादन के साथ,
आपका,
(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 10 जुलाई, 2002

कृते सामान्य परिषद

II-D

दिनांक 11–12 अगस्त 2002 की बैठक का कार्यवृत

विषय- पुनर्गठन कमेटी, कम्युनिस्ट लीग ऑफ इंडिया (मा.ले.) व सामान्य परिषद, कम्युनिस्ट लीग ऑफ इंडिया (मा.ले.) के बीच एकता के लिए बातचीत।

कार्यसूची-

1. एकता प्रक्रिया के प्रति पहुँच (approach) के सम्बंध में।
2. '95-'98 के दौरान चले संकट का दोनों संगठनों द्वारा किये गये सार-संकलन के संदर्भ में।
3. '98 के बाद के कामों की जानकारी व समाहार की रिपोर्टिंग।
4. विचारधारात्मक–राजनीतिक मतभेदों पर चर्चा।

निर्णय-

1. बातचीत जारी रखने पर दोनों संगठनों ने इच्छा व्यक्त की।
2. सामान्य परिषद आगे बातचीत की प्रक्रिया के संबंध में बाद में सूचित करेगी।
3. 12 सितम्बर तक सामान्य परिषद की ओर से प्रक्रिया को जारी रखने के संबंध में सूचना दे दी जायेगी।
4. पुनर्गठन कमेटी ने आगामी बातचीत को सार्थक बनाने के लिए सामान्य परिषद, कम्युनिस्ट लीग ऑफ इंडिया (मा.ले.) से निम्न विषयों पर निम्नलिखित लिखित चीजें मांगी-

(i) 'लाल सलाम' के अंक 5 पर राय/ आलोचना।

(ii) ' 57 तथा ' 60 के घोषणा और वक्तव्य पर सामान्य परिषद, कम्युनिस्ट लीग ऑफ इंडिया की अवस्थिति पर व्याख्या।

(iii) ' 98 के बाद से लेकर अब तक पार्टी निर्माण के लिए किये गये कार्यों के संबंध में रिपोर्ट।

(हस्ताक्षर)

प्रतिनिधि, R. C., C.L.I. (M.L.)
प्रतिनिधि, G .C., C.L.I. (M.L.)

II-E

प्रति,
सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय साथी,

दिनांक 11-12 अगस्त, 2002 को हमारे और आपके बीच हुई बातचीत के संदर्भ में हम आपको अपनी निम्नलिखित राय से अवगत कराना चाहते हैं-

1) 'लाल तारा-2' के पुनर्मुद्रण में आपके द्वारा प्रस्तावित सहयोग का हम स्वागत करते हैं। आप अगले दो महीने के अन्दर update आंकड़े, prologue, epilogue या अन्य जो भी आप उपयोगी समझते हैं, हमें भेज दें। कहने की जरुरत नहीं है कि इसके सम्पादन और छापने का अधिकार हमारा ही होगा। लेकिन अगर आप चाहेंगे तो छापने के पहले संपादित की गई सामग्री आपको दिखा दी जायेगी।
2) जैसा कि हम बातचीत के अन्त में आपको अवगत करा चुके हैं कि हम एकता वार्ता को आगे बढ़ाने के इच्छुक हैं। हम इसे यहां दोबारा रेखांकित कर रहे हैं।

3) अपने विशिष्ट कामों की व्यस्तताओं के कारण वार्ता के अगले चरण की तारीख निश्चित बताना हमारे लिए तत्काल बताना संभव नहीं है। निकट भविष्य में जब भी परिस्थिति बनेगी, हम आपकी सूचित करेंगे।
4) बातचीत को सार्थक बनाने के लिए आपने हमसे जिन चीजों की मांग की है उन पर हम लोग फिलहाल कोई औपचारिक फैसला ले नहीं पाये हैं। लेकिन इस बीच ' 57 और ' 60 के घोषणापत्र और वक्तव्य, ICM पर हमारे चिन्तन और भारतीय पूँजीपति वर्ग को Collaborationist कहने की हमारी व्याख्या को हम जब भी संभव होगा, प्राथमिकता में आप तक पहुंचा देंगे।
5) हमारी अगली वार्ता के लिए हमें आपसे जिन चीजों की जरुरत पड़ेगी, वह वार्ता के पहले आपको सूचित कर देंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 24 अगस्त, 2002

कृते सामान्य परिषद,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

II-F

प्रति,
संयोजक,
सामान्य परिषद,
भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा.ले.)

प्रिय साथी,

हम यह पत्र आपको दोनों संगठनों के बीच एकता प्रक्रिया के संबंधों के संदर्भ में लिख रहे हैं।

12 अगस्त, 2002 के अपने प्रस्ताव और 24 अगस्त, 2002 को आप द्वारा लिखे गये पत्र में व्यक्त 'सहयोग के स्वागत' के बाद निर्धारित दो माह के भीतर 'लाल तारा-2' के पुनर्मुद्रण में अपने हिस्से के काम को पूरा करके आपके पास भेज रहे हैं। हमने यथासंभव 'लाल तारा-2' की तालिकाओं को अपडेट कर दिया है, बहुत थोड़ी सी तालिकाएं ऐसी हैं जिनकी अपडेटिंग नहीं हो सकी है। इसका मूल कारण आंकड़ों की अनुपलब्धता है (इसके कारणों का उल्लेख संलग्न विशिष्ट नोट में है)। हमारी राय है कि इन तालिकाओं को 'लाल तारा-2' के annexure के बतौर अंत में संलग्न कर दिया जाय। 'लाल तारा-2' के वर्तमान पुनर्मुद्रण के लिए हमने एक भूमिका लिखी है, जिसे शुरु में दिया जा सकता है। हमारी राय में यह भूमिका ठीक और पर्याप्त है। यदि आप इसमें कुछ काट-छांट करना चाहें तो जरूर बताएं। हो सकता है किसी बात को रखने या न रखने के संबंध में हम आपको राजी कराने की आवश्यकता महसूस करें।

मुद्रण व सम्पादन के संबंध में हमारे- आपके बीच कोई गलतफहमी न रहे, इसलिए हम अपनी ओर से कुछ बातें स्पष्ट कर दे रहे हैं। 'लाल तारा-2' , भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा० ले०) की साझी कृति है। इस पर भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा० ले०) के सभी हिस्सों का पूरा-पूरा अधिकार है। इन हिस्सों में जो भी और जब भी चाहे, वह इसका पुनर्मुद्रण कर सकता है। जहां तक 1983 की कृति के सम्पादन का सवाल है, यह अधिकार

किसी के भी पास नहीं है। यह अधिकार केवल उस समूह के पास है जो आज बिखरा हुआ है। भविष्य में यदि वह इकट्ठा हो जाये तो वह इसके किसी भावी संस्करण के सम्पादन का अधिकारी हो सकता है। हां यदि 'लाल तारा-2' को किसी व्यक्ति विशेष की निजी सम्पत्ति मान लिया जाये तो वह जब चाहे तब सम्पादन करता रहे, इससे दूसरों को कोई आपत्ति नहीं होगी। जहां तक हमारे द्वारा तैयार की गयी तालिकाओं एवं भूमिका का सवाल है, इनका निस्संदेह सम्पादन किया जाना चाहिए। यह आप करें, इसमें हमें कोई आपत्ति नहीं है। निवेदन केवल इतना है कि यदि इस काम को आप हमारे साथ मिलकर करेंगे तो वह हमारे साझे हितों के लिए बेहतर होगा।

अब एकता- प्रक्रिया के संबंध में। भारत की कम्युनिस्ट लीग (मा० ले०) के सभी हिस्सों को एक करने की इच्छा से हमने सभी के पास प्रस्ताव भेजा था। इसी सिलसिले में हमने अक्टूबर, 2001 में आपके पास भी एकता प्रस्ताव भेजा था। 11-12 अगस्त की बैठक के अंत में हमने अपनी इच्छा का इजहार किया था और आपसे एकता प्रक्रिया के आगे के सिलसिले को सुनिश्चित कर लेना चाहते थे। इसके लिए 12 अगस्त को ही अगली बैठक की तारीखें, कार्यसूची, दस्तावेजों/ अवस्थिति पत्र इत्यादि के आदान-प्रदान का निश्चित कार्यक्रम तय कर लेना चाहते थे। परन्तु एकता प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की मनोगत इच्छा के इजहार के बावजूद आप कुछ भी ठोस तय करने को तैयार नहीं हुए। अगले ठोस कदम तय करने के लिए आपने एक माह का समय मांगा। 12 सितम्बर, 2002 तक आप द्वारा अपनी ओर से एकता प्रक्रिया को जारी रखने के लिए ठोस कार्यक्रम हमें बताया जाना था। परन्तु आप ने 12 सितम्बर, 2002 तक (26 सितम्बर, 2002 तक भी) ऐसा कुछ नहीं किया। उल्टे, अपने 24 अगस्त, 2002 को लिखे पत्र के बिन्दु– 3 के तहत आपने इस काम को अनिश्चित काल के लिए टाल दिया। साथियों, एकता प्रक्रिया के प्रति ऐसा अगम्भीर दृष्टिकोण कतई ठीक नहीं है।

हमारी आपसे यह भी शिकायत बनती है कि आपने एक माह के भीतर (12 सितम्बर, 2002 तक) हमें जो सामग्री उपलब्ध कराने का वायदा किया था (मसलन अपने छात्र संगठन एवं नारी संगठन के परिप्रेक्ष्य पत्र, इसके कामों की रिपोर्टें, ग्रामीण अंचल में सर्वेक्षण का तदर्थ प्रश्नपत्र इत्यादि), अपने उस वादे पर भी आप खरे नहीं उतरे। हम आपकी कार्यशैली में उक्त लापरवाही और अनौपचारिकतावाद को भी गलत मानते हैं। चूंकि 11-12 अगस्त की बैठक में आपने हमें सूचित किया था कि कम्युनिस्ट कोर के सवाल पर आप गम्भीरता से कार्य कर रहे हैं और एक हद तक आप इस दिशा में आगे भी बढ़े हैं। इसलिए हम आपके उक्त व्यवहार से ज्यादा निराश हुए हैं। इस पूरी समस्या पर ज्यादा विस्तृत टिप्पणी हम तब करना चाहेंगे, जब आप '98 से लेकर अब तक की अपने पार्टी-निर्माण कार्यों की लिखित रिपोर्ट हमें सौपेंगे।

अंत में, हम यह उम्मीद करते हैं कि आप इस पत्र को सही स्पिरिट में ग्रहण करेंगे और एक बिरादर संगठन की आलोचना का स्वागत करेंगे। हमें लौटती डाक से आपके जवाब का इंतजार है।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,
आपका,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 26 सितम्बर, 2002

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

II-G

प्रति,

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय साथी,

आपका 26 सितम्बर, 2002 का लिखा पत्र हमें अक्टूबर पूर्वाद्ध में प्राप्त हो गया था। इसके साथ ही 'लाल तारा-2' की भूमिका और अपडेट आंकड़े भी। इस सामग्री पर जब हम फैसले ले लेंगे, आप को सूचित कर देंगे। हमारा अनुमान है कि 'लाल तारा-2' का पुनर्मुद्रण आगामी गर्मी से पहले सम्भव नहीं होगा।

अपनी सांगठनिक व्यस्तताओं के कारण पत्र का जवाब हम आप द्वारा अपेक्षित समय के अन्दर नहीं दे सके। हम लोग अप्रैल, 2003 तक अपनी सांगठनिक प्राथमिकता में व्यस्त रहेंगे जिसके कारण अन्य जरूरी कामों को इस दौरान हम हाथ में नहीं ले पायेंगे। एकता प्रक्रिया संबंधी कार्यों को भी हम तभी ले पायेंगे।

आपके पत्र के संदर्भ में कुछ बातों को स्पष्ट कर देना हम जरूरी समझते हैं। आपने अपने पत्र में कई मनोगत शिकायतों और आरोपों को लिख रखा है। हमारी राय में यह आपके राजनीतिक उथलेपन और उतावलेपन की अभिव्यक्ति है।

एकता प्रक्रिया के संबंध में हमारी समानता सिर्फ इतनी है कि हम दोनों S R Line को मानते हैं और एकता चाहते हैं, जबकि हमारी भिन्नताएं कहीं अधिक हैं। एकता के बारे में हमारी समझदारी आपसे भिन्न है, इससे आप परिचित हैं। इसलिए इस प्रक्रिया के प्रति पहुंच में फर्क आना स्वाभाविक है। इस स्थिति में हमारी पहुंच को 'अगंभीर' कहना आपके उतावलेपन को दिखाता है। इसी उतावलेपन में पत्र लिखते समय आपने 11-12 अगस्त, 2002 में हमारे बीच हुई बातचीत के लिखित फैसले को दुबारा देखना गवारा नहीं समझा। हमने 12 सितम्बर तक ठोस कार्यक्रम बताने जैसा कोई committment नहीं किया था। हमें महज यह सूचना देनी थी कि प्रक्रिया को कैसे जारी रखेंगे। यह सूचना हम 24 अगस्त के पत्र के माध्यम से दे चुके थे। हमें जब जो चीज time bound commit करनी होगी और जितनी करनी होगी हम तभी और उतनी ही commit करेंगे। इसमें हम आपकी इच्छा से संचालित नहीं हो सकते हैं।

आपने लिखा है कि चूंकि हम लोग कम्युनिस्ट कोर के सवाल पर गंभीरता से काम कर रहे हैं, इसलिए आप हमारे व्यवहार से निराश हुए। आपकी यह बात भी अनावश्यक और बिना सोचे-समझे कही हुई बात है। कम्युनिस्ट कोर के संबंध में आपकी और हमारी धारणा में काफी भिन्नता है। हमारे बीच हुई फूट का यह एक अहम मुद्दा था और पिछले 11-12 अगस्त की बैठक में भी इसे चिह्नित किया गया था। कुल मिलाकर, इस मुद्दे पर आप पहले ही हमसे निराश थे। 'लाल तारा-2' के सम्पादन के सन्दर्भ में सुझाव देते हुए भी आपने इसी किस्म की गलती की है। कुछ मनोगत चिन्ताओं से प्रस्थान करते हुए आपने कुछ ऐसी कानूनी बातों का हमें ध्यान दिलाने की कोशिश की है जो अनावश्यक तो हैं ही, हमने आपसे इसकी मांग भी नहीं की थी। इसलिए यह अशोभनीय भी है।

आपसे हमारा आग्रह है कि आप उक्त बातों पर गौर से सोचें, क्योंकि ऐसी टिप्पणियों से एकता प्रक्रिया को बाधा पहुंचती है। आप अगर अपनी बातों को राजनीतिक मुद्दों के इर्द-गिर्द रखेंगे तो एकता प्रक्रिया के लिए यह स्वस्थ कदम होगा। आशा है आप पत्र का उत्तर शीघ्र देंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 02 दिसम्बर, 2002

कृते सामान्य परिषद
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

II-H

प्रति,
संयोजक
सामान्य परिषद,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

प्रिय साथी,

दिसम्बर, 2002 को आप द्वारा लिखा पत्र प्राप्त हुआ। पत्र से ज्ञात हुआ कि अप्रैल, 2003 से पहले आपके पास एकता प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए वक्त नहीं है। चलिए मई, 2003 के लिए, बैठक का दिन व समय आप अपनी ओर से प्रस्तावित कर दीजियेगा। क्रान्तिकारी व्यग्रता/ उतावलेपन, शोभनीयता/ अशोभनीयता इत्यादि मुद्दों पर तभी बातचीत करना उचित होगा, जब मई, 2003 में आप हमारे सामने होंगे। इस बीच आप, हमें वह सामग्री भिजवा दीजियेगा जो हमने आपसे मांगी थी, और जिसे उपलब्ध करवाने के लिए आप राजी थे।

क्रान्तिकारी अभिवादन सहित,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 27 दिसम्बर, 2002

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

II-I

प्रति,

सामान्य परिषद,

भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

साथियों,

सन् , 2001 में हमने आपके पास एकता प्रस्ताव भेजा था। आपने पहले इस प्रस्ताव का नकारात्मक जवाब दिया। लेकिन फिर बाद में अपनी गलत अवस्थिति ठीक करते हुए आप एकता वार्ताओं के लिए राजी हुए। अगस्त, 2002 में आपके और हमारे प्रतिनिधि मंडलों के बीच एकता वार्तायें हुई। वार्ताओं के दौरान आपने भी एकता प्रक्रिया को आगे बढ़ाने की इच्छा जाहिर की और जल्द से जल्द अगले चक्र की वार्ताओं के प्रति उत्सुकता जतायी। वार्ताओं के दौरान ही आपने हमें अनेक दस्तावेज उपलब्ध कराने का वायदा किया और 'लाल तारा-2' के पुनर्मुद्रण में हमारे सहयोग की पेशकश (नयी भूमिका लिखने एवं आंकड़ों की नयी तालिकायें तैयार करने) को भी स्वीकार किया। हमने अपना वायदा पूरा कर दिया। नियत समय में नयी भूमिका लिखकर एवं नयी तालिकायें तैयार कर आप तक पहुंचा दीं। परन्तु आपने अपना वायदा पूरा नहीं किया। आपने 'लाल तारा-2' का पुनर्मुद्रण नहीं किया। हालांकि इस दौरान आपने अन्य पुस्तकें प्रकाशित कीं। इसी प्रकार, आपने हमें कोई दस्तावेज उपलब्ध नहीं कराये।

वर्ष, 2002 में एकता प्रक्रिया को लेकर आप की अगम्भीरता के संबंध में हमारी शिकायतों पर भी आप की प्रतिक्रिया ठीक नहीं थी। आपने हमें सूचित कर दिया कि अप्रैल, 2003 तक आपके पास इस काम के लिए समय नहीं है। हमारी निगाह में इंकलाब के तमाम कामों में आज के दौर में पार्टी– गठन का काम सबसे महत्वपूर्ण है, इसलिए अन्य कार्यों के ऊपर इसे वरीयता दी जानी चाहिए। इस समझदारी के बावजूद हमारे पास कोई चारा नहीं था कि हम आपकी इस बात को अनिच्छा से स्वीकार करें कि वार्ताएं अप्रैल, 2003 के बाद की जायें। हमने आपको अपने वायदे को याद दिलाते हुए आपसे आग्रह किया कि इस दौरान हमें आवश्यक दस्तावेज उपलब्ध करा दें।

तब से लेकर अब तक न तो आपने हमें कोई दस्तावेज उपलब्ध कराये हैं और न ही आपने हमें अगले चक्र की वार्ताओं की तिथियां निश्चित करने के लिए कोई पत्र भेजा है। यह रुख निहायत गलत है। इंकलाब एक सामाजिक दायित्व है। इसके लिए रिश्ते स्थापित करना व्यक्तिगत सहूलियत तथा पसंद– नापसंद का मामला नहीं होता। एकता वार्ताओं को लेकर आपकी अगम्भीरता आप के संगठन में पेशेवर क्रान्तिकारिता के क्षरण की भी अभिव्यक्ति है। हम चाहते हैं कि आप अपनी इस कमजोरी के खिलाफ संघर्ष करें और अपने खोल में सिमटे रहने के बजाय भारत में पार्टी – गठन के लिए आप आगे आयें और उसकी चुनौतियां स्वीकार करें। इसके अंग के बतौर हमारे साथ एकता वार्ताओं के लिए भी आगे आयें।

अपने उक्त आग्रह के बावजूद यदि आपने अपनी पुरानी कार्यशैली ही जारी रखी, तब हमें यह दुःखद सार-संकलन करना पड़ेगा कि एकता में आप की कोई दिलचस्पी नहीं है। नवम्बर, 2003 तक हम आपकी सकारात्मक प्रतिक्रिया का इंतजार करेंगे। यदि तब तक भी आप के रुख में पुरानी अगम्भीरता ही बनी रही तब हम मान लेंगे कि एकता वार्ताएं टूट चुकी हैं। तब हम इनकी मर्यादाओं से नहीं बंधे रहेंगे और भारत में पार्टी– गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए स्थिति के अनुरूप संघर्ष करेंगे।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 15 जून, 2003

सचिव,

पुनर्गठन कमेटी,

भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

III

क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत से हुयी खतो-किताबत

III-A

प्रति,

सचिव,

क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत

प्रिय साथी,

पिछले वर्ष सितम्बर 2001 में हमने आपके पास एकता के लिए एक प्रस्ताव भेजा था, जो कि आप को अक्टूबर 2001 में मिल गया था।। तब से लेकर अब तक आपने अपनी ओर से इस पर कोई औपचारिक लिखित प्रतिक्रिया नहीं भेजी, हालांकि आपके प्रतिनिधि ने हमें बताया था कि आप जनवरी, 2002 में ऐसा करेंगे। आज छः माह बाद भी हम अपने पत्र के जवाब या किसी समानान्तर प्रस्ताव की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

क्रान्तिकारी अभिवादन सहित,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 20 अप्रैल, 2002

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

III-B

प्रति,

सचिव,

क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत

प्रिय साथी,

पिछले वर्ष (2001) के मध्य में हमने आपके पास एकता प्रस्ताव भेजा था। उस पर आपकी कोई औपचारिक (लिखित) प्रतिक्रिया न मिलने पर हमने वर्ष 2002 के पूर्वार्द्ध में आपको एक और पत्र लिखा। उस पर भी आप मौन रहे। किसी राजनीतिक संगठन के लिए ऐसा व्यवहार कतई उचित नहीं है।

इस वर्ष, (2002) के उत्तरार्द्ध में, -- में, हमारे प्रतिनिधि की आपके प्रतिनिधि से मुलाकात हुई। आपके प्रतिनिधि ने यही बात दोहरायी कि एकता प्रस्ताव 'आदर्शवादी एवं अव्यवहारिक है'। परन्तु इसके बावजूद वे इस बात पर सहमत थे कि 'एकता प्रक्रिया कैसे चलायी जाये?' इस मुद्दे पर ही बात करने के लिए बैठा जाये। उन्होंने हमें आश्वस्त किया कि आपका संगठन कम से कम इस पर ही अपनी औपचारिक लिखित प्रतिक्रिया देगा। परन्तु हमें अभी तक आपका कोई पत्र नहीं मिला है। हम आपसे कहना चाहते हैं कि देश के कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आंदोलन के लिए इतने महत्वपूर्ण सवाल पर मौन साध कर न तो आप राजनीतिक व्यवहार कर रहे हैं और न ही जनवाद का परिचय दे रहे हैं।

कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आंदोलन के हित में उचित कार्यवाही की अपेक्षा में,

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 27 दिसम्बर, 2002

सचिव
पुनर्गठन कमेटी
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

III-C

प्रति,
सचिव,
क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत

साथियों,

वर्ष, 2001 के उत्तरार्द्ध में हमारे द्वारा दिये गये एकता प्रस्ताव के संबंध में, विगत दिनों में आप लोगों की ओर से कुछ मौखिक प्रतिक्रियाएं हमारे पास आयी हैं। इन प्रतिक्रियाओं का आशय यह था कि एकता वार्ताओं के लिए बैठा जाये। आपकी ऐसी प्रतिक्रिया का हम स्वागत करते हैं। परन्तु हमारी राय है कि चूंकि हमने आपके पास एक औपचारिक लिखित प्रस्ताव भेजा था, इसलिए उस पर आपकी जो भी प्रतिक्रिया है वह भी हमें लिखित रूप में औपचारिक तौर पर सम्प्रेषित की जानी चाहिए थी। आप कोई भी औपचारिक लिखित प्रतिक्रिया देने के लिए तैयार नहीं हैं। हमारी निगाह में यह गलत है, यह एक सही कार्यशैली नहीं है।

परन्तु इसके बावजूद हम आपसे बातचीत के इच्छुक हैं। हम अपनी ओर से बैठक की दो तिथियां प्रस्तावित कर रहे हैं।

1. 1 से 3 जुलाई 2003 के बीच बातचीत या,
2. 15 से 17 जुलाई 2003 के बीच बातचीत।

इन तिथियों में से जो भी तिथियां आपके लिए सुविधाजनक हों, आप उन्हें चुन लें। यदि प्रस्तावित तिथियों में से कोई भी तिथियां आपकी सुविधानुसार न हों तो आप अपनी ओर से तिथियां प्रस्तावित कर दें।

एकता वार्ता की इस पहली बैठक की मेजबानी हम करना चाहेंगे, और यह इंतजाम हम –क्षेत्र में ही करेंगे। जगह की सूचना आपके उत्तर के साथ ही आपको हमारे प्रतिनिधि से मिल जायेगी।

चूंकि बैठक के विस्तृत कार्यवृत रखने के लिए आप सहमत हैं इसलिए उचित यही होगा कि जो भी बातचीत हो उसे Audio- Cassette पर ही रिकार्ड कर लिया जाये।

आपकी ओर से सकारात्मक उत्तर की प्रतिक्षा में क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,

(हस्ताक्षरित)

दिनांकः 08 जून, 2003

सचिव,
पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)

III-D

केन्द्रीय सांगठनिक कोर(प्रॉविजनल), क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत एवं पुनर्गठन कमेटी, भा० क० ली०(मा-ले) के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत के दौरान क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत अवस्थितिः

दिनांक 15 जुलाई, 2003 को हमने पुनर्गठन कमेटी, सी० एल० आई० (एम० एल०) के एकता वार्ता प्रस्ताव पर औपचारिक रूप से अपनी अवस्थिति दर्ज की। वार्ता के दौरान अपने आरम्भिक वक्तव्य और उस पर चली तीन चक्रों की बातचीत के बाद यह सहमति बनी कि दोनों पक्ष अपनी लिखित अवस्थितियों का आदान-प्रदान कर लें। हमारी अवस्थिति निम्नवत है।

हम दो संगठनों के प्रतिनिधियों के बीच औपचारिक वार्ता का लिखित कार्यवृत दर्ज करने की बजाय टेप करने के आपके अनूठे आग्रह की तीखे शब्दों में आलोचना करते हैं। संभवतः आपका संगठन कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आंदोलन की इस परम्परा से तो वाकिफ ही होगा कि केवल वर्गसंघर्षों में तपे-तपाये, सामाजिक प्रयोगों में एक हद तक खरे उतरे संगठन के नेतृत्वकारी निकायों की बैठकों की कार्यवाहियों या उसके नेताओं की वार्ताओं या भाषणों को ही शब्दशः दर्ज किया जाता रहा है। आज देश का कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आंदोलन जिस स्थिति में खड़ा है– जहां लगभग सभी संगठनों में ज्यादातर अपरिपक्व नेतृत्व मौजूद है और यहां तक कि कई संगठनों में 'upstarts' नेतृत्व मौजूद हैं– उसे देखते हुए दो संगठनों के नेतृत्व स्तर तक की बातचीत को भी शब्दशः दर्ज करने की हम जरुरत नहीं महसूस करते। बातचीत के दौरान संगठनों के प्रतिनिधियों द्वारा प्रस्तुत राजनीतिक अवस्थितियों के सार को लिखित रूप में दर्ज कर लेना और कार्यवृत के रूप में उन्हें पारित कर लेना ही काफी है। चाहे इस परम्परा से अपरिचय के कारण या आज की स्थितियों के किसी भिन्न मूल्यांकन के कारण

या किसी अन्य कारण से बातचीत टेप करने का आग्रह न केवल अव्यवहारिक है वरन किसी भी रूप में हमें इस आग्रह का कोई औचित्य समझ में नहीं आता है।

आपके प्रस्ताव पर हमने अपना रूख आपके नेतृत्वकारी साथियों से हुई अनौपचारिक बातचीत में एकाधिक बार स्पष्ट कर दिया था। लेकिन बार– बार रिमाइण्डर भेजकर वार्ता के लिए आपके प्रबल आग्रह के बाद जब हमने प्रस्ताव पर औपचारिक रूप से राय प्रकट करने के लिए आपके प्रतिनिधि से मौखिक सहमति दी तो इस पर भी आपने लिखित स्वीकृति देने की मॉग की। इसका भी कोई औचित्य हमें नहीं समझ में आता। यह बचकानेपन के सिवा कुछ नहीं है। यूं, हमारी इस सहमति का भी आपने यह आशय निकाला कि हम एकता वार्ता के लिए तैयार हैं।

हम आपको स्पष्ट कर देना चाहते हैं कि इस वार्ता में फिलहाल कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठनों के बीच किसी भी रूप में एकता- प्रक्रिया के आगे बढ़ने की सम्भावना के मद्देनजर नहीं आये हैं। सिर्फ यह स्पष्ट करने आये हैं कि हम आपके प्रस्ताव पर क्यों ''मौखिक नकारात्मक टिप्पणियां'' कर रहे थे। आपके प्रस्ताव पर सिर्फ अपना नजरिया स्पष्ट करने के लिए हम इस बातचीत के लिए तैयार हुए हैं।

हमारा यह मानना है कि आज कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठनों के बीच कोई स्वस्थ एवं सार्थक वाद-विवाद चलने की संभावनाएं अत्यन्त क्षीण हो गयी हैं। इसका प्रमुख बुनियादी कारण यह है कि अधिकांश संगठनों का संघटन (composition) ही बोल्शेविक नहीं रह गया है। एक लम्बे समय से गैर सर्वहारा सांगठनिक लाइन के अमल के कारण यह स्थिति उत्पन्न हुई है। इसलिए कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठनों के बीच राजनीतिक वाद-विवाद (polimics) के जरिये एक सर्वभारतीय पार्टी के गठन (formation) की सम्भावना हमें नजर नहीं आती। कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आंदोलन के पिछले तीन दशक से अधिक समय का इतिहास स्वयं हमारे इस निष्कर्ष की पुष्टि करता है। 1971 में SNS के अलग होने से लेकर आज तक जिस ढंग से 'पालिमिक्स' चली है उसे दुहराने की जरुरत नहीं। DVR-NGR चारु की लाइन के खिलाफ एकतरफा तरीके से पालिमिक्स चलाते रहे। क्या यह सच्चाई नहीं कि अब तक 'पालिमिक्स' के नाम पर ज्यादातर 'पालिमिक्स' नामधारी तू-तू मैं-मैं ही होती रही है। इसलिए हमारा यह दृढ़ मत है कि जब अधिकांश संगठनों का संघटन ही बोल्शेविक नहीं रह गया है तो फिर भारतीय क्रान्ति की विचारधारा, कार्यक्रम, रणनीति-रणकौशल आदि प्रश्नों पर बहस का कोई औचित्य ही नही है। और अगर सिर्फ काडरों को प्रभावित करने की बात हो तो फिर पालिमिक्स की क्या जरुरत? यहां एक सर्वभारतीय पार्टी के गठन और निर्माण के बारे में हम अपनी समग्र समझ को नहीं प्रस्तुत कर रहे हैं। आपके प्रस्ताव पर अपना रुख स्पष्ट करने के लिए जरुरी होने पर ही हम इस संबंध में अपने कुछ अहम बुनियादी निष्कर्षों को यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

आपके संगठन के अब तक के राजनीतिक- सांगठनिक व्यवहार को देखते हुए हमें आपका संगठन एक संदिग्ध चरित्र वाला संगठन नजर आता है। आपकी कम्युनिस्ट स्प्रिट पर ही हमें सन्देह है। हमारे ऐसा मानने के पर्याप्त आधार हैं।

भा० क० ली०(मा०ले०) में 1990 में हुई फूट के बारे में आपके संगठन ने आज तक न तो अपनी ओर से कोई राय प्रकट की और न ही हमारे संगठन द्वारा इस फूट के बारे में प्रस्तुत दस्तावेज की कोई आलोचना ही कभी प्रस्तुत की। 1990 की फूट के समय आप रामनाथ के गुट के साथ थे। आपके नेतृत्व के एक साथी तक हम लोगों को उस समय भगोड़ा एवं राजनीतिक कैरियरवादियों का गिरोह प्रचारित करते घूम रहे थे। यहां सवाल यह उठता है कि क्या आज हमारे बारे में आपका मूल्यांकन बदल चुका है जो हमसे एकता वार्ता करने के लिए इतने व्यग्र दिख रहे हैं। अगर आपका मूल्यांकन बदल गया है तो पहले आपको लिखित रूप में इसे स्वीकार करना चाहिए फिर किसी किस्म की वार्ता का प्रस्ताव करना चाहिए। ऐसा नहीं करना क्या राजनीतिक अवसरवाद नहीं है? इस मुद्दे पर एकाध बार आपके किसी साथी से यह मौखिक प्रतिक्रिया सुनने को मिली कि आप 1990 की फूट के

हमारे तरीके से सहमत नहीं हैं। इस पर हम आपको सिर्फ यह याद दिलाना चाहते हैं कि हमारा तरीका सही था या गलत, यह सवाल तो उस काडर-कार्फ्रेंस में तय होना था जिसमें रामनाथ गुट के लोग, जिसमें आप भी शामिल थे, आये ही नहीं। सच तो यह है कि जो लोग काडर-कार्फ्रेंस से पूंछ उठाकर भाग खड़े हुए उन्होंने ही खुद को भगोड़ा साबित कर लिया। इसी तरह मार्च 1989 की फूट के समय रवि सिन्हा गुट भी काडर-कार्फ्रेंस से भाग खड़ा हुआ था। इस फूट पर भी आपने अब तक चुप्पी साध रखी है।

1991 से लेकर 1998 तक आप रामनाथ गुट के साथ बने रहे। इस बीच रामनाथ की सांगठनिक कार्यशैली को लेकर आपके कुछ मतभेद पैदा हुए। हालांकि इस बारे में भी रामनाथ और उनके साथ खड़े लोगों का कहना यह है कि आपने अपने मतभेदों को रखना तब शुरु किया जब रामनाथ ने आपके नेतृत्वकारी साथियों की संगठनकर्ता के रूप में असफलताओं को मुद्दा बनाना शुरु किया। बहरहाल, 1998 में जब आपने पुनर्गठन कमेटी के रूप में स्वयं को संगठित किया, तब भी आपने तत्काल हम लोगों से सम्पर्क कर बातचीत करने की जरूरत महसूस नहीं की, जबकि रामनाथ की सांगठनिक लाइन के बारे में हमने जो सवाल 1990 में उठाये थे और फूट के कारणों का जो सांगोपांग विश्लेषण प्रस्तुत किया था लगभग वही सवाल उठाते हुए आप रामनाथ गुट से अलग हुए थे। अब तीन- चार वर्षों बाद अचानक आप हमसे एकता वार्ता का प्रस्ताव लेकर आये हैं। इससे क्या यह नहीं प्रकट होता कि आप एकता वार्ता चलाने के पहले अपने संगठन को consolidate कर लेना चाहते थे? यह सोच किस प्रवृत्ति को प्रकट करती है इस बारे में हमें टिप्पणी करने की कोई जरूरत नहीं।

एकता वार्ता की यह समूची प्रक्रिया ही हमें राजनीतिक अवसरवाद का नमूना नजर आती है। सवाल यह है कि आप किनसे एकता वार्ता करना चाहते हैं? वार्ता के लिए संगठनों की पात्रता की जो शर्तें आपने अपने प्रस्ताव में गिनायी हैं, क्या C.C.C.L.I.(M-L) और G.C.C.L.I.(ML) उन पर खरे उतरते हैं? C.C.C.L.I.(M-L) के बारे में हमारी यह दृढ़ राय है कि इस संगठन का राजनीतिक–सांगठनिक व्यवहार मार्क्सवाद के उसूलों से किसी भी रूप में निर्देशित नहीं हो रहा है और इसका सांगठनिक ढांचा एवं कार्यप्रणाली बोल्शेविज्म के उसूलों से संचालित नही हो रही है। हालांकि आपने खुद अपने दस्तावेज में इस संगठन की जो आलोचनाएं रखी हैं उनके आधार पर यह संगठन आपकी पात्रता की शर्तों पर खरा नहीं उतरता। विचारधारात्मक महत्व के तमाम बुनियादी प्रश्नों पर यह नववामपंथी और सामाजिक-जनवादी अवस्थितियां अपनाए हुए है। बोल्शेविज्म के उसूलों को इस संगठन ने अपने एक दस्तावेज में सिद्धान्ततः खारिज कर दिया है और मेंशेविज्म की सोच से भी मीलों पीछे जा खड़ा हुआ है। इतना ही नही, इस संदेह के भी पर्याप्त आधार हैं कि यह संगठन N.G.O.'s के साम्राज्यवादी नेटवर्क की जरूरतों के लिए इस्तेमाल हो रहा है। ऐसे में इस संगठन को हम समानधर्मा संगठनों के बीच की किसी वार्ता के लिए उपयुक्त नहीं समझते।

G.C.C.L.I.(M-L) को C.C.C.L.I.(ML) से भिन्न मानते हुए भी इस संगठन से आप द्वारा एकता वार्ता चलाने के बारे में हमारा सवाल यह है कि जिस सांगठनिक लाइन के सवाल पर आपका मतभेद पैदा हुआ था उस सवाल का क्या हुआ? क्या उन्होंने अपनी कोई आत्मालोचना प्रस्तुत की है? सवाल यह भी है कि आपने जिन लोगों को संगठन से निकाल दिया उनके समूह को संगठन का दर्जा कब दे दिया? इन प्रश्नों के मद्देनजर इन दोनों संगठनों से एकता वार्ता का आपका प्रयास आपके संगठन के चरित्र पर ही संदेह प्रकट करता है। विचित्र बात तो यह है कि आप अपने दस्तावेज में इन दोनों संगठनों से पहले राउण्ड की वार्ता को सकारात्मक बताते हैं। इससे खुद बोल्शेविज्म के उसूलों के प्रति आपकी प्रतिबद्धता पर ही संदेह पैदा होता है। एक क्रान्तिकारी सर्वहारा पार्टी के बारे में आपकी सोच कितनी ढुल्लम-पुल्लम है! कथनी में बोल्शेविज्म के उसूलो की दुहाई और करनी में मेंशेविक उसूलों के प्रति नरमी- क्या यह राजनीतिक दुरंगापन नहीं है?

हमें यह भी लगता है कि आपका संगठन इतिहास से कोई सबक निकालना नहीं चाहता है। तभी तो कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आंदोलन में चले पॉलिमिक्स के इतिहास से कोई नतीजा निकाले बिना आपका

नेतृत्व पालिमिक्स के मैदान में उतर पड़ा है। दूर की बात छोड़ भी दें तो आपका संगठन हाल-फिलहाल के अनुभवों से भी कुछ सीखता नजर नहीं आता। 1989 की पहली फूट के बाद C.C.C.L.I.(M-L) co-ordination committee के प्रस्ताव का अनुभव क्या रहा था? उसके बाद की अवधि में कौन से ऐसे सकारात्मक विकास हो गये हैं कि एक बार फिर उसी तरह का प्रस्ताव आपने लेकर घूमना शुरु कर दिया? खुद आप द्वारा 'लाल सलाम' में शुरु की गयी पालिमिक्स का क्या हश्र हो रहा है?

इतिहास से कोई सबक न निकालने की आपकी इस असमर्थता का कारण हमें यह समझ आता है कि आप इतिहास के असुविधाजनक तथ्यों से ऑखें मूंद लेते हैं। C.L.I.(M-L) के इतिहास के बारे में आपके रवैये से यह बात विशेष स्पष्टता से प्रकट होती है। अपने पार्टी मुखपत्र (लाल सलाम, अंकः 5) के 'सम्पादकीय के एवज में' C.L.I.(M-L) के इतिहास की चर्चा करते हुए आपने सिर्फ स्वयं द्वारा रामनाथ की सांगठनिक कार्यशैली के खिलाफ चलाये गये संघर्ष का उल्लेख किया है। C.L.I.(M-L) के भीतर चले अन्य दो लाइनों के महत्वपूर्ण संघर्षो और 1989 व 1990 की फूटों (जिनके बारे में हमारा मानना है कि ये न केवल इस संगठन के इतिहास की वरन् समूचे कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास की बेहद महत्वपूर्ण घटनाएं हैं) का उल्लेख तक नहीं है। आप ऐसा भी नहीं कह सकते कि C.L.I.(M-L) के भीतर चले अन्य दो लाइनों के संघर्षो से आप नावाकिफ हैं। आप उनसे अच्छी तरह वाकिफ हैं लेकिन अपनी सुविधानुसार आप उनसे आंखें मूंद लेते हैं। क्या इतिहास के प्रति यह इमानदार रवैया है? क्या C.L.I.(M-L) के इतिहास के बारे में यह धोखे में रखना नहीं है? क्या यह इतिहास में अपना नाम दर्ज कराने को आतुर राजनीतिक कैरियरवादी प्रवृत्ति नही है?

इन्हीं तमाम आधारों पर हम आपके संगठन को संदिग्ध चरित्र वाला और राजनीतिक अवसरवादियों व कैरियरवादियों का जमावड़ा मानते हैं। यूं तो आपकी समूची राजनीतिक लाइन के विश्लेषण से यह सिद्ध किया जा सकता है, लेकिन फिलहाल हम यह अनुपयोगी काम क्यों करें? जब तक हमारे इन संदेहों का निराकरण नहीं हो जाता तब तक हम आपके संगठन से किसी किस्म की एकता वार्ता का कोई औचित्य नहीं देखते। इनके निराकरण की बुनियादी जरूरत यह है कि आपका संगठन 1989 व 1990 की फूटों पर अपनी लिखित अवस्थिति दे। इसके बाद ही इस दिशा में कोई कदम बढ़ाया जा सकता है।

इतिहास की इबारतों को मिटाकर कोई नया इतिहास नहीं लिखा जा सकता। इतिहास के प्रति नजरिये का सवाल बेहद अहम सवाल है और भारत में एक सर्वभारतीय पार्टी के गठन एवं निर्माण के संदर्भ में देश के कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी आन्दोलन के इतिहास के प्रति नजरिये का सवाल विशेष रूप से अहम है। यहां तक कि C.P.I.(M-L) के गठन से लेकर उसके उत्तरवर्ती समूचे इतिहास के सवालों को भी स्थगित नहीं किया जा सकता, ऐसे में C.L.I.(M-L) के निकट अतीत के इतिहास को खारिज कर देने का तो सवाल ही नहीं पैदा होता। इस सवाल को दरकिनार कर 'एकता के प्रति ईमानदारी से चिह्नित होने' का लोकरंजकवादी (populist) मुखौटा तो धारण किया जा सकता है पर वास्तविक एकता की दिशा में रत्तीभर भी नहीं बढ़ा जा सकता ।

हमारे आरम्भिक वक्तव्य के बाद R.C., C.L.I.(M-L) के प्रतिनिधियों ने हमारे संगठन के बारे में जो टिप्पणियां कीं व अन्य मसलों पर जो अवस्थितियां जाननी चाहीं उन पर कोई राय रखने की हम तब तक कोई उपयोगिता नहीं देखते जब तक कि यह संगठन 1989 व 1990 की फूटों पर व 1990 की फूट के बारे में हमारे दस्तावेज पर तथा ऊपर उठाये गये अन्य नुक्तों पर अपनी लिखित अवस्थिति नहीं दे देता है। इसके बिना बातचीत के दौरान हमसे पूछे गये अन्य राजनीतिक मसलों पर भी अपनी अवस्थिति रखना या राय 'शेयर' करना हम निरर्थक और औचित्यहीन मानते हैं।

दिनांकः 16 जुलाई, 2003

प्रतिनिधि,

क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत

III-E

केन्द्रीय सांगठनिक कोर(प्रॉविजनल), क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट लीग, भारत एवं पुनर्गठन कमेटी, भा० क० ली०(मा-ले) के प्रतिनिधियों के बीच बातचीत

सितम्बर, 2001 में R.C., C.L.I.(M-L) द्वारा दिये गये एकता प्रस्ताव के संदर्भ में दोनों संगठनों की नेतृत्वकारी समितियों के स्तर पर 15 जुलाई, 2003 के दिन पहले चक्र की वार्ताएं हुई।

इस वार्ता के शुरु में ही C.O.C.(Provisional) , R.C.L., I. के प्रतिनिधि ने स्पष्ट कर दिया कि वे एकता प्रक्रिया को आगे बढ़ाने नहीं आये हैं, बल्कि औपचारिक तौर पर यह स्पष्ट करने आये हैं कि क्यों वे एकता प्रक्रिया को आगे नहीं बढ़ाना चाहते रहे हैं। इस अवस्थिति से बोलते हुए R.C.L., I. के प्रतिनिधिमंडल ने जो बातें रखी, उनमें मुख्य हैः

1- भारत का कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी शिविर मूलतः और मुख्यतः विघटित हो चुका है, कि R.C.L., I. के अलावा और कोई भी संगठन कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठन नहीं है (हालांकि विभिन्न संगठनों में कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी व्यक्ति हैं), कि R.C.L., I. के अलावा अन्य संगठन अपनी composition (संघटन) में पेटी-बुर्जुआ क्रान्तिकारी संगठन हैं, और कि कुछ को तो इस श्रेणी में भी नहीं रखा जा सकता है। ऐसे में, आज पार्टी गठन की प्रक्रिया को आगे बढ़ाना सम्भव नहीं है।

2- कम्युनिस्ट आंदोलन की वर्तमान स्थिति में "पार्टी-गठन, पार्टी निर्माण के अधीन हो गया है"। R.C.L., I. के प्रतिनिधिमंडल ने हाल-फिलहाल के लिए अपनी इस अवस्थिति की व्याख्या करने से इंकार कर दिया।

3- R.C., C.L.I.(M-L) एक संदिग्ध चरित्र वाला संगठन है। R.C., C.L.I.(M-L) के चरित्र को संदिग्ध मानने के कई कारण हैं। इनमें प्रमुख हैं:

(i) R.C., C.L.I. (M.L.) ने C.L.I.(M.L.) में 1989 एवं 1990 में हुई फूटों के बारे में अब तक एक शब्द भी नहीं लिख कर दिया है। ऐसा इसलिए क्योंकि इन फूटों के साथ ऐसे अनेक असुविधाजनक मुद्दे जुड़े हुए हैं, जिनका सामना करने के लिए R.C., C.L.I. (M.L.) तैयार नहीं है।

(ii) 1998 में R.N. के नेतृत्व वाले संगठन से अलग होने के बाद, R.C., C.L.I. (M.L.) ने R.C.L.,I. से सम्पर्क नहीं किया। यह एक राजनीतिक अवसरवाद है। आज तीन- चार वर्षों बाद जब R.C., C.L.I. (M.L.) एकता प्रस्ताव रख रही है तो यह राजनीतिक अवसरवाद ही नहीं, राजनीतिक कैरियरवाद भी है क्योंकि इसके पीछे की मंशा यह थी कि पहले अपने संगठन को सुदृढ़ कर लिया जाय, फिर वहां से खड़े होकर एकता की पेशकश की जाये।

(iii) C.C., C.L.I. (M.L.) की औपचारिक तौर पर आलोचना करने के बाद C.C., C.L.I. (M.L.) से एकता की कोशिश करना और एकता वार्ता को सकारात्मक बताना इस बात को प्रदर्शित करता है कि R.C., C.L.I. (M.L.) बोल्शेविज्म की तमाम बातें करने के बावजूद स्वयं बोल्शेविज्म से परे जा रही है।

(iv) बोल्शेविज्म उसूलों के नाम पर R.N. के नेतृत्व वाले संगठन से अलग होने के बाद, R.C.L.,I.ने पुनः उनसे एकता की पेशकश की। क्या आज R.C., C.L.I. (M.L.) को लगने लगा है कि R.N. के नेतृत्व वाला संगठन अब बोल्शेविज्म उसूलों का पालन कर रहा है?

(v) R.C., C.L.I. (M.L.) की लिखित अवस्थितियों में भी राजनीतिक अवसरवाद अभिव्यक्त होता है, लेकिन अभी R.C.L.,I. इन पर टीका-टिप्पणी करने और इन पर संघर्ष चलाने के बजाय इस बात का इंतजार कर रही है कि यह लाइन और फूले-फले।

(4) R.C., C.L.I. (M.L.) द्वारा दिया गया एकता प्रस्ताव idealistic, अव्यवहारिक एवं ingenuine है। साथ-साथ एकता के प्रति R.C., C.L.I. (M.L.) की पहुँच रूपवादी (formalistic) है।

बैठक में R.C., C.L.I. (M.L.) के प्रतिनिधिमंडल ने जो बातें रखीं, उनमें मुख्य हैंः

1. भारत के कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी शिविर के प्रति R.C.L., I. का रुख न केवल गैर-कम्युनिस्ट है, यह गैर-जनवादी भी है। भारतीय समाज में कम्युनिस्ट क्रान्तिकारियों के संगठन एक वास्तविकता हैं। ये संगठन न केवल अपने दावों में कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठन हैं, बल्कि सिद्धान्त और व्यवहार दोनों ही दृष्टि से ये कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठन हैं। हालांकि देश में कम्युनिस्ट आंदोलन की संकटग्रस्त स्थिति के चलते ये अनेक भटकावों एवं विसंगतियों के शिकार हैं। लेकिन अपनी तमाम कमजोरियों के बावजूद ये संगठन कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठन हैं और मिलकर ये जिस शिविर का निर्माण करते हैं वह समकालीन भारतीय समाज का यथार्थ है। R.C.L., I. जब इस यथार्थ से ही इंकार करती है और साथ ही स्वयं को एकमात्र कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठन भी कहती है, तो वह गैर-जनवादी है। अनेक कम्युनिस्ट ग्रुप अपनी सैद्धान्तिक समझ और व्यवहार दोनों में R.C.L., I. से बेहतर हैं। उन्हें कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी न मानना और खुद को कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी मानने का मतलब है कि R.C.L., I. में बुनियादी कम्युनिस्ट विनम्रता का अभाव है।

   R.C.L., I. की उक्त अवस्थिति उसे ऐसी जगह ले जाकर खड़ा कर देती है, जहां से वह देश में एक अखिल भारतीय क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी के गठन में कोई सकारात्मक भूमिका अदा नहीं कर पायेगी। यह दुःखद है। R.C.L., I. के साथियों को इस पर पुनःविचार करना चाहिए और इसे बदलना चाहिए। ऐसा करने पर ही वे दूसरे संगठनों से बराबरी के आधार पर अंतर्क्रिया कर पायेंगे, उनसे कुछ सीख पायेंगे एवं उनकी गलतियों/ दिक्कतों के खिलाफ लड़ पायेंगे। खुद को कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी मानने और दूसरों के इस वजूद को न स्वीकार करने से वे दूसरों के सामने एक ही चारा छोड़ते हैं कि वे R.C.L., I. में समाहित (merge) हो जाएं। अर्थात इस दावे के बावजूद कि R.C.L., I. एक पार्टी नहीं बल्कि एक अपरिपक्व ग्रुप है, R.C.L., I. किसी सुगठित एवं प्राधिकार संपन्न पार्टी की तरह आचरण कर रही है। एक अदना से ग्रुप के लिए ऐसा व्यवहार उद्दण्डता है।

2. देश में कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी शिविर के वजूद को मूलतः व मुख्यतः अस्वीकार करने के बावजूद और खुद को एक मात्र कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठन मानने के बावजूद R.C.L., I. अपनी ही अवस्थिति की चुनौतियों को नहीं स्वीकार करती। यदि देश में क्रान्तिकारी कम्युनिस्ट पार्टी का गठन विभिन्न कम्युनिस्ट ग्रुपों/ संगठनों की एकता से नहीं होना है तो R.C.L., I. को यह साफ बताना चाहिए कि वह कैसे देश में एक कम्युनिस्ट पार्टी का गठन करेगी। इस पर R.C.L., I. ने न तो अब तक कोई दस्तावेज दिया है और न ही उसके प्रतिनिधि मौखिक तौर पर ही कोई खाका (vision) प्रस्तुत करने को तैयार हैं। यदि R.C.L., I. आज देश में बचा हुआ एकमात्र कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी संगठन है, तब तो उसे पार्टी गठन के कार्य को बहुत ज्यादा संजीदगी से लेना चाहिए क्योंकि उस पर ही अब भारतीय क्रान्ति का भविष्य निर्भर करता है। वह पार्टी गठन के काम को यदि अपना केन्द्रीय

कार्यभार नहीं बनाती तो भारत में मजदूर वर्ग का संघर्ष सुधारवाद के दायरे में ही सिमटा रहेगा और क्रान्ति का काम एक इंच भी आगे नहीं बढ़ पायेगा। ऐसे में R.C.L., I. का फौरी कार्यभार बनता है कि वह पार्टी-गठन के लिए अपना खाका पेश करे। परन्तु अफसोस कि अपनी ही अवस्थिति द्वारा पैदा हुई उक्त चुनौती को कबूल करने के बजाय R.C.L., I. ने सांस्कृतिक गतिविधियों को अपने संगठन का केन्द्रीय कार्यभार बना रखा है। यह कार्यशैली पलायनवादी कार्यशैली है।

3. R.C., C.L.I. (M.L.) अपने कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी चरित्र के प्रति आश्वस्त है, कि उसे असंदिग्ध साबित करने के लिए वह R.C.L., I. की किसी भी मांग को पूरा करने के या कोई स्पष्टीकरण देने की आवश्यकता नहीं समझती है। हां, संदिग्ध चरित्र की बातें करते समय R.C.L., I. के प्रतिनिधिमंडल ने जो आपत्तियां एवं सवाल उठाये हैं, उन पर R.C., C.L.I. (M.L.) जहां और जैसा जरूरी समझेगी, वहां और वैसे अपनी अवस्थितियों की व्याख्या करेगी। लेकिन ये स्वतंत्र व्याख्याएं होंगी, चरित्र को लेकर स्पष्टीकरण नहीं।

4. पार्टी इतिहास का मूल्यांकन करने से R.C., C.L.I. (M.L.) को कोई आपत्ति नहीं है। हालांकि R.C., C.L.I. (M.L.) की नजर में एकता वार्ताओं के प्रारम्भिक चरण में इससे कोई लाभ नहीं होगा। पार्टी-इतिहास और उसमें हुई भूलों-गलतियों के संदर्भ में R.C., C.L.I. (M.L.) द्वारा निकाले गये सबकों में से एक महत्वपूर्ण सबक यह है कि यदि कभी संगठन में षडयंत्र हो भी रहा हो, तब भी प्रति-षडयंत्र करना गलत है, कि सर्वहारा की विचारधारा एवं राजनीति इतनी बेजान नहीं होती कि उसे प्रति-षडयंत्र का सहारा लेना पड़े, कि सांगठनिक ढांचे को बरकरार रखते हुए षडयंत्र का भंडाफोड़ किया जाना चाहिए और षडयंत्रकारियों को हटाया जाना चाहिए। प्रति-षडयंत्र की थीसिस को अस्वीकार करते हुए इस रास्ते पर चलने में क्रान्तिकारियों के संयम, धैर्य व इरादे की मजबूती की परीक्षा होगी और क्रान्तिकारियों को इस परीक्षा का सामना करना चाहिए न कि प्रति-षडयंत्र का पलायनवादी रास्ता अख्तियार करना चाहिए। इस सार-संकलन के तहत यह सुस्पष्ट है कि R.C., C.L.I. (M.L.) 1989 एवं 1990 दोनों फूटों में प्रति-षडयंत्र के इस्तेमाल को गलत मानती है, और जिस हद तक उसने इस थीसिस को मान्यता दी थी, उस हद तक R.C., C.L.I. (M.L.) इस गलती के लिए अपनी कतारों में आत्मालोचना कर चुकी है।

5. 1998 की फूट के बाद में R.C., C.L.I. (M.L.) ने R.C.L., I के साथ सम्पर्क क्यों नहीं किया और उसमें समाहित (merge) क्यों नहीं हो गये? इस सवाल पर R.C., C.L.I. (M.L.) के प्रतिनिधिमण्डल ने स्पष्ट किया कि 1990 में R.C.L., I के साथियों का संगठन में फूट करने का तरीका गलत था, कि इन साथियों ने 1990 में R.N. द्वारा काडर-कार्फ्रेंस के तथाकथित टाले जाने एवं तथाकथित consolidation के खिलाफ संघर्ष करना तो दूर, P.R.C. की दो महीने की बैठक में प्रतिवाद तक नहीं किया। बैठक में हर चीज पर सहमति जताने के बाद जनवादी केन्द्रीयता, तदर्थवाद, बोल्शेविकीकरण आदि मुद्दे गिनाते हुए विलग हो जाना गलत है। ऐसी भीरुता प्रदर्शित करते हुए बोल्शेविक पार्टी नहीं बनायी जा सकती है।

दूसरा यह कि 1990 से अब तक R.C.L., I. ने न तो अपना स्थापना सम्मेलन किया है और न ही औपचारिक तौर पर अंतर्राष्ट्रीय/ राष्ट्रीय परिस्थितियों का मूल्यांकन करते हुए अपने कार्यभार गिनाये हैं। ऐसे में वर्तमान संगठन भी नये संदर्भों में उसी कार्यशैली को दोहरा रहा है, जिस कार्यशैली की उसने 1990 में भर्त्सना की थी। एक दशक से ज्यादा लम्बे काल तक R.C.L., I. का तदर्थ वजूद एक बेहद चिंताजनक बात है और यह हाल के दिनों में उसके द्वारा प्रदर्शित पेटी-बुर्जुआ भटकावों को जन्म देने में सहायक है। कुल मिलाकर R.C.L., I. का विकास ऐसा नहीं रहा है कि क्रान्ति के बारे में

गम्भीर लोग उसके प्रति आकर्षित हों। ऐसे में R.C., C.L.I. (M.L.) का R.C.L., I में समाहित न होने का फैसला सही है। हां, एकता वार्तायें नितांत भिन्न बात हैं। यहां दो संगठन बराबरी की जमीन पर खड़े होकर एकता वार्ताएं चलाते हैं, एक-दूसरे की कमियों/ विसंगतियों/ भटकावों को चिह्नित करते हैं, उनके खिलाफ संघर्ष करते हैं और तब नयी उच्च समझ के आधार पर सांगठनिक एकता कायम करते हैं। R.C.L., I. को परेशानी एकता (unity) से है, समाहीकरण (merger) से नहीं। इसीलिए उसे 2001 में बढ़ाया गया दोस्ती का हाथ नामंजूर है। आज भी यदि R.C., C..L. I.(M-L) एकता की पेशकश को छोड़कर, समाहित होने की पेशकश करे (यानि कि R.C.L., I. की लाइन को सही माने और उसके विरूद्ध संघर्ष न करे), तो शायद आज भी R.C.L., I. का नेतृत्व हममें दिलचस्पी लेने लगेगा।

कुल बात यह कि 1990 में न केवल R.C.L., I. के साथियों द्वारा संघर्ष के बजाय फूट का रास्ता चुनना गलत था, बल्कि आज भी R.C.L., I. की राजनीतिक व्यवहार की अंतर्वस्तु गैर-जिम्मेदाराना एवं गैर-जनवादी है। इसे बदलकर और इसे ठीक करके ही R.C.L., I. भारत में पार्टी-गठन में कोई योगदान दे पायेगी। R.C.L., I. की वर्तमान अवस्थितियां तो ढेरों गैर-कम्युनिस्ट भटकावों से भरी पड़ी हैं जिनमें से अनेक के खिलाफ R.C., C.L. I.(M-L) भी उससे संघर्ष चलाती रही है, हालांकि R.C.L., I. ऐसे संघर्षों से किनाराकशी कर लेती रही है। 1990 का विशिष्ट पलायन आज R.C.L., I. के चरित्र की सामान्य कमी बनता जा रहा है।

6. R.C., C.L.I.(M-L) तमाम मतभेदों एवं अतीत की कड़वाहट के बावजूद C.C., C..L I.(M-L) एवं G.C., C..L I.(M-L) से अपने एकता प्रस्ताव के तहत एकता वार्ताओं के प्रयास को सही मानती है। सर्वप्रथम, R.C., C..L I.(M-L) उक्त दोनों संगठनों को आज भी कम्युनिस्ट क्रान्तिकारी शिविर का अंग मानती है और इनके भटकावों के खिलाफ संघर्ष को अपना दायित्व मानती है। इसके लिए वह संवाद एवं संघर्ष के सभी रास्ते निकालेगी।

दूसरे, R.C.,C..L I.(M-L) के एकता प्रस्ताव में विचारधारात्मक शर्त एवं सांगठनिक ढांचे की शर्त (अर्थात् सर्वोच्च कमेटी का पेशेवर क्रान्तिकारियों द्वारा निर्मित होना) समन्वय समिति की स्थापना के लिए शर्तें थीं। ये उससे पूर्व की प्रक्रिया के लिए शर्तें नहीं बनती हैं।

तीसरे, यह कि R.C., C..L I.(M-L) को अपनी वैचारिक दृढ़ता पर भरोसा है, इसलिए वह भटकावग्रस्त संगठनों के करीब जाने एवं उनकी ओर एकता का हाथ बढ़ाने से डरती नहीं है। R.C., C..L I.(M-L) - G.C., C..L I.(M-L) को, C.C., C..L I.(M-L) को एवं R.C.L, I. को मात्रात्मक अंतरों के बावजूद गुणात्मक अर्थों में एक ही तरह के पूर्व-पार्टी संगठन मानती है। भटकावों के बावजूद इनमें से कोई भी उसके लिए अछूत नहीं है।

\+ + +

उक्त आदान-प्रदान के पश्चात R.C.L, I. के प्रतिनिधियों ने R.C., C..L I.(M-L) से 1989 एवं 1990 की फूट पर लिखित अवस्थितियां मांगी और इसे आगामी वार्ताओं के लिए शर्त के बतौर रखा।

R.C., C..L I.(M-L) ने स्पष्ट किया कि उक्त शर्त R.C., C..L I.(M-L) के संदिग्ध चरित्र वाले आरोप के संदर्भ में लगायी जा रही है, इसलिए R.C., C..L I.(M-L) को यह नामंजूर है। यदि भविष्य में R.C., C..L I.(M-L) इन फूटों पर कोई लिखित अवस्थिति जारी भी करती है तो वह अपने चरित्र को असंदिग्ध साबित करने के लिए नहीं होगी बल्कि यह कार्यवाही R.C., C..L I.(M-L) की अपनी योजनाओं के हिस्से के बतौर होगी।

तब ये लिखित अवस्थितियां R.C..L,I. के लिए नहीं होगी बल्कि समस्त क्रान्तिकारी शिविर के लिए होंगी, जिसके अंग के बतौर R.C..L,I. भी उन्हें पढ़ने की हकदार होगी।

अपनी बारी में R.C., C..L I.(M-L) ने R.C.L, I. से पार्टी गठन/ पार्टी निर्माण के बारे में उसके दृष्टिकोण पर अवस्थिति पत्र की मांग की, हालांकि यह किसी भी प्रकार की शर्त नहीं है। ऐसे पत्र के अभाव में भी अगले चक्र की वार्तायें चलाई जा सकती हैं। R.C., C..L I.(M-L) ने यह भी स्पष्ट किया कि एकता वार्ताओं को आगे बढ़ाने में उसकी दिलचस्पी है, परन्तु R.C.L, I. के साथी इसके लिए आगे नहीं आयेंगे, तब एक हाथ से ताली नहीं बजायी जा सकती है।

इस चक्र की वार्ताओं के अंत में R.C.L, I. ने यह भी साफ कर दिया कि एकता प्रक्रिया को R.C.L, I. तभी आगे बढ़ायेगी, जब 1989 एवं 1990 की फूटों के मूल्यांकन को लेकर दोनों संगठनों की एक राय बन जाती है।

R.C., C..L I.(M-L) इस पहुंच को गलत मानती है। इसका मानना है कि दोनों संगठनों की वर्तमान विचारधारा, राजनीति, सांगठनिक लाइन इत्यादि सवालों पर एक राय आज ज्यादा अहम् सवाल हैं और इन पर एकता कायम करने के लिए संघर्ष किया जाना चाहिए। यदि इन पर एकता कायम हो जाती है, तो इनकी रोशनी में अतीत का भी मूल्यांकन किया जाये। इन वर्तमान और बुनियादी बातों की रोशनी में ही अतीत पर एक सही आम राय कायम हो सकती है, कि अपने आप में इतिहास के मूल्यांकनों का कोई अर्थ नहीं होता यदि वर्तमान समस्याओं एवं वर्तमान मुद्दों पर सहमति बनाने के लिए सीधे संघर्ष न किया जाय। अर्थात इतिहास में जड़ होने और पुरानी शिकायतों को दोहराते रहने के बजाय हमें वर्तमान चुनौतियों की रोशनी में ही इतिहास का मूल्यांकन करना चाहिए।

दिनांकः 16 जुलाई, 2003

पुनर्गठन कमेटी,
भारत की कम्युनिस्ट लीग(मा.ले.)